RNI No.: UPHIN/25/A1697

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 284
दि. 15.02.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

असम दौरे पर डिब्रूगढ़ पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी, पहली बार नेशनल हाइवे पर हुई पीएम के विमान की लैंडिंग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 फरवरी को असम में 5,450 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन किया. उन्होंने डिब्रूगढ़ में पहली आपातकालीन लैंडिंग सुविधा का अवलोकन किया और ब्रह्मपुत्र पर अत्याधुनिक 'कुमार भास्कर वर्मा सेतु' देश को समर्पित किया.

(जीएनएस)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी असम दौरे के तहत डिब्रूगढ़ पहुंच गए हैं. उनके दौरे की शुरूआत बेहद रणनीतिक रही, जब उनका विमान डिब्रूगढ़ के मोरान बाईपास पर नवनिर्मित इमरजेंसी लैंडिंग सुविधा (एछत्र्) पर उतरा. यह पहली बार है कि पीएम का विमान नेशनल हाइवे पर उतरा.

पूर्वोत्तर भारत में अपनी तरह की यह पहली सुविधा है, जो युद्ध और प्राकृतिक आपदा जैसी स्थितियों में भारतीय वायुसेना के लिए गेम-चेंजर साबित होगी.

प्रधानमंत्री ब्रह्मपुत्र नदी पर बने कुमार भास्कर वर्मा सेतु का उद्घाटन करेंगे. ₹3,030 करोड़ की लागत से बना यह 6-लेन पुल पूर्वोत्तर का पहला 'एक्स्ट्राडोज्ड' पुल है. इस आधुनिक पुल की मदद से गुवाहाटी

और उत्तर गुवाहाटी के बीच का सफर जो घंटों में तय होता था, अब मात्र 7 मिनट में सिमट जाएगा. इसमें भूकंपरोधी तकनीक और रियल-टाइम हेल्थ मॉनिटरिंग सिस्टम का इस्तेमाल किया गया है.

प्रधानमंत्री आईआईएम गुवाहाटी का उद्घाटन करेंगे, जो क्षेत्र में उच्च शिक्षा के मानक बदलेगा. साथ ही, कामरूप जिले में राष्ट्रीय डेटा केंद्र का शुभारंभ होगा. 8.5 मेगावाट क्षमता वाला यह केंद्र पूर्वोत्तर की सरकारी सेवाओं को डिजिटल रूप से सुरक्षित और सशक्त बनाएगा.

इलेक्ट्रिक तोहफा, भावनगर को पीएम ने दी 50 ई-बसों की सौगात

(जीएनएस)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम में ₹5,450 करोड़ के प्रोजेक्ट्स के उद्घाटन के साथ गुजरात के भावनगर को एक बड़ी सौगात दी है। पीएम-ई-बस सेवा योजना (ढट-ेइ४२ रीद्) के तहत भावनगर को 50 इलेक्ट्रिक बसें सौंपी गई हैं। यह कदम न सिर्फ शहर में प्रदूषण कम करेगा बल्कि लोगों के सफर को भी आरामदायक बनाएगा।

भावनगर गुजरात का पहला ऐसा शहर बन गया है जहां इस योजना के तहत बसें चलना शुरू हुई हैं। यह भारत को स्वच्छ और आधुनिक बनाने की दिशा में एक बड़ा और जरूरी कदम है।

क्या है पीएम-ई-बस सेवा और इसका मकसद?

यह योजना केंद्र सरकार की एक शानदार पहल है जिसका लक्ष्य शहरों में पुरानी और प्रदूषण फैलाने वाली बसों की जगह 'क्लीन और ग्रीन' इलेक्ट्रिक बसें लाना है। इसके पहले चरण में नागपुर, चंडीगढ़ और गुवाहाटी जैसे शहरों को चुना गया है। गुजरात में इसे लागू करने की जिम्मेदारी 'गुजरात अर्बन डेवलपमेंट मिशन' को दी गई है। मकसद साफ

है-शहरों में शोर और धुंआ कम करना और आम आदमी को एक ऐसी बस सेवा देना जो सस्ती भी हो और पर्यावरण के लिए सही भी। भावनगर को क्यों मिली प्राथमिकता?

भावनगर के लिए कुल 100 बसों का प्लान है, जिनमें से 50 बसें अब सड़कों पर उतर चुकी हैं। इससे शहर का पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम काफी मजबूत होगा। ये बसें पूरी तरह एयर-कंडीशंड (AC) हैं, जिससे गर्मियों में सफर आसान होगा। साथ ही, सुरक्षा के लिए इनमें CCTV कैमरे लगे हैं और दिव्यांगों के लिए खास डिजाइन तैयार किया गया है ताकि उन्हें चढ़ने-उतरने में दिक्कत न हो। भावनगर इस मामले में गुजरात के बाकी शहरों के लिए एक मिसाल पेश कर रहा है।

भावनगर तो बस शुरूआत है, आने वाले समय में गुजरात के 8 प्रमुख शहरों में कुल 750 इलेक्ट्रिक बसें चलाने की तैयारी है। वडोदरा को सबसे ज्यादा 250 बसें मिलेंगी, जबकि राजकोट, गांधीनगर और जामनगर जैसे शहरों में भी ई-बसों का जाल बिछाया जाएगा। गांधीधाम और नवसारी जैसे छोटे शहरों को भी इस योजना से जोड़ा गया है। गुजरात सरकार इसके लिए जरूरी चार्जिंग स्टेशन और तकनीकी ढांचा तैयार करने में देश के अन्य राज्यों के मुकाबले काफी आगे चल रही है।

पर्यावरण और भविष्य की ओर एक बड़ा कदम

यह सिर्फ बसें चलाने की बात नहीं है, बल्कि ग्लोबल वॉर्मिंग के खिलाफ भारत की जंग का एक हिस्सा है। डीजल बसों की जगह बिजली से चलने वाली ये बसें कार्बन उत्सर्जन को काफी हद तक कम करेंगी। राष्ट्रीय स्तर पर किए जा रहे इन प्रयासों से न केवल शहरों की हवा साफ होगी, बल्कि नई तकनीक आने से रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। यह पहल हमें एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा रही है जहां हमारा सफर सुरक्षित, आधुनिक और पूरी तरह ईको-फ्रेंडली होगा।

भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर भड़के सीएम उमर अब्दुल्ला, जम्मू-कश्मीर के किसानों के लिए जताई चिंता

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने श्रीनगर के स्कॉस्ट शालीमार में 11वें गोंगुल कृषि मेले का उद्घाटन किया। इस तीन दिवसीय आयोजन में मुख्यमंत्री ने जोर दिया कि राज्य सरकार का प्राथमिक लक्ष्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है। उन्होंने बताया कि पशुपालन, मछली पालन, डेयरी और विशेष रूप से जैविक

खेती के माध्यम से किसानों की आय को दोगुना करने के लिए कई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इस मेले के माध्यम से लाखों किसानों को आधुनिक तकनीक और जैविक समाधानों से जोड़ा जाएगा।

बुजुर्ग और निराश्रित महिलाओं को अब मिलेंगे 1500 रुपये, सीएम योगी ने पेंशन बढ़ाने का किया ऐलान

यूपी में बजट पर चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2022 के घोषणापत्र में पेंशन की राशि बढ़ाकर 1500 रुपये महीना करने का वादा किया गया था।

(जीएनएस)।

लखनऊः उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ ने 1.06 करोड़ सामाजिक पेंशनधारकों की पेंशन में बढ़ोतरी का ऐलान किया है। विधानसभा में शुक्रवार को राज्यपाल के अभिभाषण पर आए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान सीएम ने कहा कि बजट में इसके लिए धनराशि की व्यवस्था कर दी गई है। इसकी विस्तृत जानकारी बजट चर्चा के दौरान उपलब्ध करवाई जाएगी।

सामाजिक पेंशन के दायरे में दिव्यांग, वृद्धजन एवं निराश्रित महिलाएं आती है। 2017 से पहले दिव्यांग पेंशन 300 रुपये और अन्य 500 रुपये महीना थी। योगी सरकार ने इसे बढ़ाकर 1000 रुपये महीना किया था। 2022 के घोषणापत्र में इसे बढ़ाकर 1500 रुपये महीना करने का वादा किया गया

था। सीएम ने अब इस बढ़ोतरी का ऐलान किया है। हालांकि, बढ़ी धनराशि की तस्वीर बजट पर चर्चा के दौरान साफ होगी। प्रदेश में 67.50 लाख लोगों को वृद्धावस्था, 38.50 लाख महिलाओं को निराश्रित और 11 लाख लोगों को दिव्यांग पेंशन मिलती है।

पीएम 21 को सेमीकंडक्टर पार्क का शिलान्यास करेंगे

योगी ने बताया कि डेटा सेंटर एवं सेमीकंडक्टर पार्क की स्थापना एवं विस्तार की दिशा में यूपी तेजी से आगे बढ़ रहा है। 21 फरवरी को पीएम नरेंद्र मोदी प्रदेश के पहले सेमीकंडक्टर यूनिट का शिलान्यास करेंगे। वहीं, मेरठ-दिल्ली रेपिड रेल भी पीएम के हाथों उद्घाटन होगा।

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के समानंतर बनेगा रेल कॉरिडोर

सीएम ने सपा सरकार के दौरान बनी पूर्वांचल एक्सप्रेसवे की कार्ययोजना को भ्रष्टाचार पर आधारित बताया। उन्होंने कहा कि बिना जमीन अधिग्रहण के ही टेंडर अलाट कर दिया गया था।

गौरव गोगोई पाकिस्तानी एजेंट... पीएम मोदी पर कांग्रेस नेता ने उठाया सवाल तो भड़क गए शहजाद पूनावाला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के असम के मोरान बाईपास ईएलएफ पर उतरने के बाद कांग्रेस नेता गौरव गोगोई ने विवाद खड़ा कर दिया। उन्होंने सवाल उठाया कि हवाई किराए में हो रही बढ़ोतरी के बीच क्या ऐसी परियोजनाओं से असम के नागरिकों को कोई फायदा होता है। लखीमपुर में एक प्रेस वार्ता के दौरान गोगोई ने इस परियोजना की आलोचना की।

(जीएनएस)।

नई दिल्लीः शनिवार सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विमान असम के मोरान में स्थित पूर्वोत्तर के पहले आपातकालीन लैंडिंग सुविधा केंद्र (ईएलएफ) पर उतरा, जो एक ऐतिहासिक घटना है। यह राज्य के रणनीतिक और बुनियादी ढांचागत

विकास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।राष्ट्रीय राजमार्ग के इस विशेष रूप से निर्मित खंड को भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विमानों को आपात स्थिति में उड़ान भरने और उतरने में सक्षम बनाने के लिए विकसित किया गया है। वहीं, इस मामले में अब राजनीति भी तेज हो गई है। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने पीएम मोदी पर सवाल उठाए तो अब शहजाद पूनावाला ने उनपर जोरदार पलटवार किया।

कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने सवाल उठाते हुए कहा कि हवाई किराए में हो रही बढ़ोतरी के बीच क्या ऐसी परियोजनाओं से असम के नागरिकों को कोई फायदा होता है क्या? आज कल डिब्रूगढ़ से दिल्ली के विमान का टिकट लेने में 15 से 20 हजार तक खर्च करने पड़ रहे हैं। एयरपोर्ट पर सारे सामान महंगे मिल रहे हैं। लेकिन आप मजे में घूम रहे हो। अब गौरव गोगोई के सवाल उठाने के बाद शहजाद पूनावाला ने सवाल उठाए हैं।

बीजेपी नेता शहजाद पूनावाला ने गौरव गोगोई पर पलटवार करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी असम की पहली आपातकालीन लैंडिंग सुविधा पर उतरे झ जो रक्षा और आपदा राहत के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है झ वहीं पाकिस्तानी एजेंट गौरव गोगोई ने शिकायत करना शुरू कर दिया! क्या प्राथमिकताएं मायने रखती हैं? कांग्रेस पूर्वोत्तर के रणनीतिक उत्थान का जश्न नहीं मना सकती। दुखद! वह असम से इतनी नफरत क्यों करते हैं?

कारगिल युद्ध के वीर शहीद कप्तान जिंटू गोगोई की माता दुलुप्रभा गोगोई ने कहा कि गौरव गोगोई को पाकिस्तान नहीं जाना चाहिए था। उनकी पत्नी भी पाकिस्तान में काम करती थीं। उनका (पाकिस्तान जाना) ठीक नहीं है। असम हमारा है; उन्हें यहीं रहना चाहिए और काम करना चाहिए, असम के लिए काम करना चाहिए।

उनके पिता (तरुण गोगोई) ने अच्छा काम किया, उन्हें भी अपने पिता की तरह ही काम करना चाहिए। उन्होंने (पाकिस्तान ने) मेरे बेटे को मार डाला। इसलिए गौरव गोगोई को वहां नहीं जाना चाहिए। हम सब एक ही जगह, असम के हैं। मुझे उनका पाकिस्तान जाना बिल्कुल पसंद नहीं आया।

भोपाल मंत्रालय में फर्जी आईएएस बनकर घुसा युवक, ट्रांसफर मांगते ही खुली पोल

(जीएनएस)।

भोपाल स्थित मंत्रालय के सामान्य प्रशासन विभाग में शुक्रवार को एक चौंकाने वाली घटना सामने आई, जिसने सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए। एक युवक खुद को आईएएस अधिकारी बताकर विभाग में पहुंच गया और ट्रांसफर की मांग करने लगा।

उसने दावा किया कि वह 2019 बैच का अधिकारी है और इंदौर में एसडीएम रह चुका है। युवक ने वरिष्ठ अधिकारियों के नाम लेकर दबाव बनाने की कोशिश भी की, लेकिन सतर्कता के चलते उसकी सच्चाई सामने आ गई और उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया।

उप सचिव की सतर्कता से खुला फजीवाड़ा

जब युवक सामान्य प्रशासन विभाग के उप सचिव अजय कटेसरिया से मिला, तो उसने अपनी पदस्थापना न होने की शिकायत करते हुए तत्काल ट्रांसफर की मांग रखी।

बातचीत के दौरान युवक की बातों पर संदेह होने पर कटेसरिया ने तुरंत आईएएस कैडर सूची की जांच करवाई। सूची में युवक द्वारा बताए गए नाम का कोई रिकॉर्ड नहीं मिला। जब उससे पहचान पत्र मांगा गया, तो वह कोई वैध दस्तावेज पेश नहीं कर पाया। इसके बाद सुरक्षा अधिकारियों को बुलाकर उसे हिरासत में ले लिया गया।

सुरक्षा व्यवस्था पर उठे सवाल

घटना के बाद मंत्रालय की सुरक्षा व्यवस्था चर्चा का विषय बन गई है। जानकारी के अनुसार युवक सामान्य आगंतुक के रूप में प्रवेश कर सीधे विभाग तक पहुंच गया।

यह तथ्य दशार्ता है कि उच्च सुरक्षा वाले परिसर में भी पहचान सत्यापन की प्रक्रिया को और मजबूत करने की जरूरत है। अधिकारियों का कहना है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त जांच और डिजिटल सत्यापन व्यवस्था लागू की जाएगी।

अरुंधति रॉय ने बर्लिन फिल्म फेस्टिवल से अचानक क्यों वापस लिया अपना नाम? क्या है पूरा विवाद

मशहूर भारतीय लेखिका अरुंधति रॉय ने बर्लिन फिल्म फेस्टिवल (बर्लिनेल) से अपना नाम वापस लेकर पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। बुकर प्राइज विजेता रॉय ने यह कदम जूरी प्रेसिडेंट विम वेंडर्स के उस बयान के विरोध में उठाया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि सिनेमा को 'राजनीति से दूर' रहना चाहिए।

अरुंधति रॉय, जो अपनी बेबाकी के लिए जानी जाती हैं, उन्होंने गाजा की स्थिति पर फेस्टिवल के रुख और जूरी की चुप्पी को "हैरान करने वाला" बताया है।

बेंगलुरु मेट्रो स्टेशन पर कर सकेंगे शॉपिंग

बेंगलुरु में निमार्णाधीन मेट्रो ब्लू लाइन पर स्थित वीरनपाल्या मेट्रो स्टेशन को एक आधुनिक तीन-मंजिला व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

यह पहल न केवल यात्री सुविधाओं को बेहतर बनाएगी, बल्कि बेंगलुरु मेट्रो रेल कॉपोर्रेशन लिमिटेड के लिए आय के नए रास्ते भी खोलेगी। वीरनपाल्या स्टेशन को मल्टी-लेवल कमर्शियल हब के रूप में डिजाइन किया गया है, जिसमें एक पूरा फ्लोर शॉपिंग और दूसरी कमर्शियल गतिविधियां होंगी। इससे रोजाना बड़ी संख्या में आने-जाने वाले यात्रियों, खास तौर पर मयंत्रा टेक पार्क के आईटी पेशेवरों को सीधा लाभ मिलेगा। स्टेशन परिसर में रिटेल स्टोर्स, फूड आउटलेट्स, एटीएम, सर्विस काउंटर और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजना है। जिससे यह एक 'वन-स्टॉप डेस्टिनेशन' के रूप में उभरेगा।

– ब्लू लाइन का यह हिस्सा शहर के आईटी कॉरिडोर से जुड़ा हुआ है, जहां रोजाना हजारों कर्मचारी आवाजाही करते हैं। ऐसे में स्टेशन के भीतर ही यात्रियों को जरूरी सुविधाएं और शॉपिंग विकल्पों की उपलब्धता से समय की बचत होगी और दैनिक यात्रा अधिक सुविधाजनक बनेगी।

'सेवा तीर्थ' नाम से जाना जाएगा दिल्ली का यह मेट्रो स्टेशन, रातों-रात बदली पहचान

(जीएनएस)।

देश की सत्ता के केंद्र रायसीना हिल्स में एक ऐतिहासिक बदलाव हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नए अत्याधुनिक प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) 'सेवा तीर्थ' के उद्घाटन के बाद, दिल्ली मेट्रो ने भी अपनी पहचान बदल ली है। येलो लाइन पर स्थित प्रसिद्ध 'उद्योग भवन' मेट्रो स्टेशन का नाम अब आधिकारिक रूप से 'सेवा तीर्थ' कर दिया गया है।

नए पीएमओ परिसर की भव्यता के अनुरूप अब स्टेशन के साइनबोर्ड, घोषणाओं और डिजिटल मैप्स को अपडेट कर यात्रियों को नई पहचान से जोड़ा जा रहा है।

सत्ता से सेवा की नई पहचान

नए प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम 'सेवा तीर्थ' रखा गया है, मोदी सरकार के मुताबिक ये बदलाव इस बात का प्रतीक है कि यह परिसर केवल शक्ति का केंद्र नहीं, बल्कि जनसेवा का मंदिर है। इसी भावना को विस्तार देते हुए इसके सबसे नजदीकी मेट्रो स्टेशन का नाम बदला गया है। अब यात्रियों के लिए 'उद्योग भवन' का पुराना अध्याय समाप्त होकर 'सेवा तीर्थ' के रूप में एक नए युग की शुरूआत हुई है, जो शासन और जनता के बीच के जुड़ाव को दशार्ता है।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉपोर्रेशन (DMRC) ने इस बदलाव को सुचारू बनाने के लिए तकनीकी अपडेट शुरू कर दिए हैं। टोकन वेंडिंग मशीन (TVM) और मोबाइल ऐप्स पर अब 'सेवा तीर्थ' नाम रिफ्लेक्ट होने लगा है। ऑडियो सिस्टम में 'अगला स्टेशन सेवा तीर्थ है' की उद्घोषणा अपडेट की जा रही है। हालांकि, तकनीकी रूप से यात्रियों के लिए केवल नाम बदला है; गेट नंबर, स्टेशन की संरचना और इंटरचेंज की सभी सुविधाएं पहले की तरह ही काम करती रहेंगी।

'ब्रैकेट नेमिंग' से भ्रम होगा दूर

अचानक हुए इस बदलाव से यात्रियों, विशेषकर पर्यटकों को परेशानी न हो, इसके लिए अगले तीन महीनों तक 'ब्रैकेट नेमिंग' (इ१ू"ी३ ढ्रेंल्लॅ) की व्यवस्था की गई है। सभी प्रमुख साइनबोर्ड पर 'सेवा तीर्थ' के साथ ब्रैकेट में 'पूर्व उद्योग भवन' लिखा रहेगा। इसके अतिरिक्त, स्टेशन के प्रवेश और निकास द्वारों पर विशेष सहायक तैनात किए गए हैं, जो नए नाम को लेकर भ्रमित यात्रियों का मार्गदर्शन करेंगे और उन्हें रूट की जानकारी देंगे।

सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना के तहत रायसीना हिल्स का स्वरूप पूरी तरह बदल रहा है। नया पीएमओ 'सेवा तीर्थ' और उसी नाम का मेट्रो स्टेशन इस पूरे क्षेत्र को एक आधुनिक और एकीकृत पहचान प्रदान करते हैं। शहरी विशेषज्ञों के अनुसार, महत्वपूर्ण सरकारी भवनों के नाम पर स्टेशनों का नामकरण न केवल दिशा-निर्देशों को आसान बनाता है, बल्कि यह शहर के बदलते ऐतिहासिक और राजनैतिक परिदृश्य को भी मजबूती से रेखांकित करता है।

सम्पादकीय

हरदीप पुरी ने एपस्टीन संबंधी आरोप पर प्रेस कांफ्रेंस कर मामले को किया स्पष्ट

सारी दुनिया में इस समय इस एपस्टीन फाइल्स की चर्चा हो रही है। अमेरिका में नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण और मानव तस्करी के आरोपी अरबपति जेप्री एपस्टीन से जुड़े गोपनीय दस्तावेज सार्वजनिक होते ही दुनिया की सत्ता और रसूख के गलियारों में हलचल मच गईं है। जैप्री एपस्टीन की पूरी कहानी किसी और दिन बताऊंगा, आज तो एपस्टीन फाइल्स और भारत के एक मंत्री का नाम सामने आने के बारे में बताऊंगा। एक लंबे गतिरोध के बाद बुधवार को लोकसभा में बजट पर बोलते हुए विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अमेरिका और भारत की ट्रेड डील पर मोदी सरकार पर कई आरोप लगाए। उन्होंने कई आर्थिक मुद्दों पर सवाल उठाएं। अपने भाषण में नेता प्रतिपक्ष ने जेप्री एपस्टीन फाइल्स, अनिल अंबानी और अडानी से जुड़े मामलों पर भी बोले। उन्होंने अनिल अंबानी और वेंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी पर भी आरोप लगाए। राहुल गांधी की ओर से इन मुद्दों को उठाने के बाद सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच तनाव बढ़ गया। चूंकि लोकसभा की चर्चा में हरदीप पुरी का नाम आ गया था। इसलिए मंत्री हरदीप पुरी ने बाद में बाकायदा एक प्रोस कांप्रोंस की और अपना पक्ष रखा। हरदीप पुरी ने कहा कि एपस्टीन से उनकी मुलाकात केवल तीन-चार मौकों पर वह भी एक प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के तौर पर हुईं थी और उनके साथ सिर्प एक ईं-मेल का आदान-प्रदान हुआ था। संसदीय कार्यं मंत्री किरेन रिजिजू ने राहुल गांधी के आरोपों को निराधार बताया और स्पीकर से अनुरोध किया कि राहुल गांधी के भाषण की गलत बातों को कार्रवाईं से हटा दिया जाए। उधर राहुल गांधी ने एपस्टीन फाइल्स का जिव्र करते हुए कहा कि वेंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने कि अनिल अंबानी का परिचय अमेरिकी निवेशक और यौन अपराधी जेप्री एपस्टीन से कराया था। उन्होंने कहा एक बिजनेसमैन है अनिल अंबानी, मैं पूछना चाहता हूं कि वो जेल में क्यों नहीं है? मैं हरदीप पुरी से भी पूछना चाहता हूं, जिन्होंने उन्हें एपस्टीन से परिचय करवाया था। हरदीप पुरी ने अपनी प्रेस कांफेंस में कई बातें कहीं। उन्होंने कहा एपस्टीन से जुड़ी 30 लाख फाइलें रिलीज हुईं है और मैं न्यूयार्व में आठ साल रहा। मैं संयुक्त राष्ट्र में भारत का राजदूत बनकर 2009 में पहुंचा था और 2017 में मैं मंत्री बना और आठ सालों में संभवतः तीन या चार मीटिग का संदर्भ है। अमेरिका में भारतीय राजदूत के पद से रिटायर होने के कुछ महीने बाद मुझे इंटरनेशनल पीस इंस्टीटूट (आईंपीआईं) में आयोजित किया गया था। मैं आईंसीएम के अध्यक्ष जो आस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री थे के साथ एक डेलीगेशन में एपस्टीन से मिला था। हरदीप पुरी का कहना था कि एपस्टीन से जुड़े अन्य मामलों से उनका कोईं लेना-देना नहीं है। हरदीप पुरी की प्रोस कांप्रोंस के बाद कांग्रोस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने एक्स पर पोस्ट डालते हुए पुरी से वुछ 6 सवाल पूछे। पवन खेड़ा ने लिखा : हरदीप पुरी ने कहा कि उनके सदस्यों ने उन्हें रीड हाफमैन से मिलवाया था। लेकिन जो उन्होंने नहीं कहा, वह ज्यादा मायने रखता है। 4 अक्टूबर 2014 को एपस्टीन ने हरदीप पुरी को ईं-मेल किया गया रीड से मुलाकात हुईं? पुरी ने जवाब दियाः क्या मैं आज दोपहर एक मीटिग के लिए सैन प्रंसिस्को में हूं। मेरे दोस्त, तुम तो चीजें करवा देते हो। कोईं सलाह? इसके बाद खेड़ा ने एक्स पर की गईं पोस्ट में 6 सवाल पूछे, ये सवाल थे - पहला : एपस्टीन की रीड के साथ उनकी मुलाकात के बारे में पहले ही वैसे पता चल गया? दूसरा : क्या एपस्टीन ही वह वंटैक्ट था जिसने रीड हॉफमैन के साथ मुलाकात करवाईं थी? तीसरा : हरदीप उनसे मुलाकात की जानकारी क्यों डिस्कस कर रहे थे? चौथा : एपस्टीन को दोस्त कह के क्यों संबोधित किया था? पांचवां : एपस्टीन हरदीप के लिए क्या करवा रहा था? छठा : अगर उनका संबंध महज एक संयोगवश या सतही था तो हरदीप पुरी एपस्टीन से सलाह क्यों मांग रहे थे? एपस्टीन फाइल्स में लाखों दस्तावेज, वीडियो, ईंमेल हैं। अभी बहुत से खुलासे बाकी हैं। इन फाइल्स के खुलासों के कारण अब तक 10 देशों में महत्वपूर्ण पदों पर बैठे राजनेता, उद्योगपति, नौकरशाह, राजघराने से जुड़े महत्वपूर्ण लोगों के इस्तीफे हो चुके हैं और 80 की जांच जारी है। अभी तो मामला शुरू हुआ है, आगे-आगे देखिए होता है क्या?

पीएम मोदी ने मीटिंग में ऐसा क्या कहा, अफसर रह गए सन्न! 17000 करोड़ की सब्सिडी और 29 लाख घरों में पहुंचा उजाला

(जीएनएस)।

'पीएम सूर्य घर' योजना पोर्टल के अनुसार, पिछले दो साल में 60.87 लाख से अधिक आवेदन आए। अब तक 23.60 लाख से अधिक रूफटॉप सोलर स्टॉल जा चुके हैं, जिनके जरिए 29,37,640 परिवारों को फायदा पहुंचा है. सरकार ने इस योजना पर अब तक 16,920.15 करोड़ रुपए की सब्सिडी भी रिलीज की है.

(जीएनएस)।

नई दिल्ली. आज से ठीक दो साल पहले, फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक सपना देखा था झ हर घर की छत पर सूरज की शक्ति हो और बिजली का बिल जीरो हो. आज, फरवरी 2026 में 'पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना' ने 29 लाख से ज्यादा परिवारों की जिंदगी रोशन कर दी है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह योजना इतनी सफल क्यों हुई? इसका राज 'मोदी स्टोरी' ने खोला है. पीएम मोदी का सिर्फ एक सुझाव, 'इसे गति शक्ति (ऋ्र रैं३) से क्यों नहीं जोड़ते?ह्व झ इस पूरी योजना के लिए टर्निंग पॉइंट साबित हुआ. जहां अफसर सिर्फ सोलर पैनल लगाने के बारे में सोच रहे थे, वहां प्रधानमंत्री एक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने की सोच रहे थे.

जब प्रेजेंटेशन के बीच पीएम ने पूछा एक सवाल

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के पूर्व सचिव भूपिंदर सिंह भल्ला ने एक दिलचस्प किस्सा साझा किया. अधिकारी पीएम मोदी को यह दिखाने की तैयारी कर रहे थे कि कैसे तकनीक का इस्तेमाल करके छतों पर सोलर सिस्टम का आकलन किया जा सकता है. वे खुश थे कि उनका प्लान

तैयार है. तभी पीएम मोदी ने टोका और पूछा, 'इसको गति शक्ति के साथ इंटीग्रेट नहीं कर सकते?ह्व

भल्ला ने माना कि उन्होंने इस पहलू के बारे में सोचा ही नहीं था. अधिकारी सिर्फ 'रूफटॉप सोलर' के नजरिए से देख रहे थे, जबकि पीएम मोदी इसे एक 'नेशनल टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म' और बड़े डेटा इंफ्रास्ट्रक्चर के तौर पर देख रहे थे. इसी एक सुझाव ने योजना की रफ्तार और स्केल दोनों बदल दिए.

सिर्फ सब्सिडी नहीं, यह ऊर्जा आजादी का आंदोलन है

'मोदी स्टोरी' ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा कि इस योजना का मकसद सिर्फ सरकारी सब्सिडी बांटना नहीं था. यह टेक्नोलॉजी से चलने वाला एक ऐसा आंदोलन है, जो भारत को 'एनर्जी इंडिपेंडेंस' (ऊर्जा आत्मनिर्भरता) की ओर ले जा रहा है. गति शक्ति से जुड़ने के कारण रूफटॉप सोलर प्लानिंग एक बड़े राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म का हिस्सा बन गई, जिससे करोड़ों लोगों तक पहुंचना आसान हो गया.

2 साल में क्या बदला? आंकड़े बोलते हैं

पीएम सूर्य घर योजना के पोर्टल के आंकड़े बताते हैं कि यह योजना कितनी बड़ी हिट रही हैः

कुल आवेदनः 60.87 लाख से अधिक.

इंस्टॉलेशनः 23.60 लाख से ज्यादा घरों में सोलर सिस्टम लग चुके हैं.

फायदाः 29,37,640 परिवारों को इसका सीधा लाभ मिला है.

सब्सिडी की बारिशः सरकार ने अब तक 16,920.15 करोड़ रुपये की सब्सिडी लोगों के खातों में भेजी है.

यह सफलता बताती है कि जब विजन बड़ा होता है, तो नतीजे भी ऐतिहासिक होते हैं. पीएम मोदी की दूरदर्शी सोच ने न सिर्फ लोगों का बिजली बिल जीरो किया, बल्कि भारत को ग्रीन एनर्जी के नक्शे पर सबसे ऊपर ला खड़ा किया.

'थलापति' विजय बनेंगे किंगमेकर? पीके या ओवैसी मॉडल बन कर किसका खेल बिगाड़ेगी टीवीके

(जीएनएस)।

तमिलनाडु में 2026 विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। राज्य में दशकों से जारी 'द्रविड़ वर्चस्व' को इस बार एक फिल्मी सुपरस्टार से कड़ी चुनौती मिल रही है।

थलापति विजय की एंट्री ने राज्य के राजनीतिक पंडितों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या 2026 का चुनाव किसी बड़े 'बदलाव' का गवाह बनेगा। विजय और उनकी नई पार्टी तमिलगा वेत्री कझगम ने चुनावी समीकरण में एक नया 'एक्स-फैक्टर' जोड़ दिया है।

सवाल यही है क्या विजय महज वोट काटने वाले तीसरे विकल्प बनेंगे या फिर एमजीआर की तरह सत्ता की राजनीति में बड़ा उलटफेर करेंगे? विस्तार से समझिए किंग या किंगमेकर कि भूमिका में विजय की पार्टी किसको पहुंचाएगी नुकसान...

तमिलनाडु चुनाव में 'विजय फैक्टर' क्यों चर्चा में?

बीजेपी के तमिलनाडु प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने हाल ही में इंडिया टूडे को दिए एक इंटरव्यू में साफ कहा कि विजय एक फैक्टर हैं और हम उन्हें नजरअंदाज नहीं कर रहे। अन्नामलाई के मुताबिक, जेन-जी और युवा वोटर्स विजय की ओर आकर्षित हो सकते हैं, खासकर ऐसे समय में जब डीएमके बनाम एआईएडीएमके की पारंपरिक लड़ाई से एक वर्ग ऊब चुका है।

विजय को कई लोग 'तीसरे

विकल्प' के रूप में देख रहे हैं। हालांकि, अन्नामलाई ने यह भी जोड़ा कि विजय के पास फिलहाल लंबा राजनीतिक अनुभव और मजबूत गठबंधन नहीं है, जिसका एनडीए को अप्रत्यक्ष फायदा हो सकता है।

रैलियों में भीड़ तो है, लेकिन क्या सीटों में बदलेगा जनाधार?

विजय की रैलियों में उमड़ती भारी भीड़ यह संकेत देती है कि जमीनी स्तर पर हल्की एंटी-इंकंबेंसी जरूर मौजूद है। मजबूत पार्टी ढांचा न होने के बावजूद विजय को वोट मिल सकते हैं, लेकिन बड़ा सवाल यही है कि क्या ये वोट सीटों में तब्दील होंगे?

राजनीतिक विश्लेषक इसकी तुलना बिहार में प्रशांत किशोर से कर रहे हैं। पीके की रैलियों में भी जबरदस्त भीड़ दिखी थी, लेकिन चुनावी नतीजों में वह असर नहीं दिखा। सवाल यह है कि क्या विजय, प्रशांत किशोर की तरह केवल वोट काटेंगे? या फिर अक्टक्ट प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी की तरह एक निर्णायक फैक्टर बनेंगे?

क्या है तीसरी पार्टी का गणित, किसे होगा नुकसान?

राजनीति का बुनियादी नियम है सीट जीतने के लिए संगठन और जमीनी नेटवर्क जरूरी होता है, जो सालों में तैयार होता है। फिलहाल विजय ने न ऊ्टड से गठबंधन किया है और न ही अक्अऊ्टड के साथ जाने के संकेत दिए हैं। विजय लगातार अपनी रैलियों में दोनों द्रविड़ दलों की वे खुलकर आलोचना कर रहे हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि ळश्ड का सीधा नुकसान डीएमके को हो सकता है, खासकर शहरी इलाकों, युवाओं और महिलाओं के वोट बैंक में।

बीजेपी की रणनीति भी यहीं जुड़ती है। बीजेपी जानती है कि तमिलनाडु में सत्ता पाना फिलहाल मुश्किल है, इसलिए वह "पावर नहीं, पैठ" की राजनीति खेल रही है। यदि ळश्ड और अन्य गैर-द्रविड़ ताकतें डीएमके का वोट काटती हैं, तो इसका अप्रत्यक्ष लाभ बीजेपी और उसके गठबंधन दलों को मिल सकता है।

बीजेपी का तमिलनाडु में हिंदी भाषा, राष्ट्रीय मुद्दों और तमिल अस्मिता को जोड़ने का प्रयास जारी है। ऐसे में विजय का उभार बीजेपी के लिए रणनीतिक रूप से मददगार माना जा रहा है, भले ही दोनों का कोई औपचारिक गठबंधन न हो।

रजनीकांत और कमल से अलग क्यों?

तमिलनाडु की राजनीतिक इतिहास में देखा जाए तो साउथ सिनेमा के सुपरस्टार का एक बड़ा जनाधार रहा है। जब भी कोई फिल्म अभिनेता चुनावी मैदान में उतरता है तो इसकी सीधी तुलना 'पुरैची थलाइवर' एमजी रामचंद्रन से होती है। हालांकि, उनके बाद रजनीकांत, कमल हासन जैसे बड़े सुरस्टार भी राजनीति में जरूर उतरे लेकिन उनका सियासी सिक्का कुछ खास नहीं चला। रजनीकांत राजनीति से पीछे हट गए और कमल हासन अपेक्षित असर नहीं छोड़ पाए ऐसे में अब नजरें विजय पर टिकी हैं।

देखिए रजनीकांत और कमल हासन ने अपने करियर के ढलते दौर में राजनीति चुनी, जबकि विजय 51 साल की उम्र में अपने करियर के चरम पर राजनीति में आए हैं। विजय के पास सिर्फ फैन्स नहीं, बल्कि करीब 70,000 बूथ एजेंट्स बताए जाते हैं। 2021 के स्थानीय निकाय चुनावों में उनके समर्थकों ने निर्दलीय उम्मीदवारों के तौर पर 169 में से 115 सीटें जीतकर सबको चौंका दिया था।

विजय युवाओं और महिलाओं, सामाजिक कल्याण, मुफ्त शिक्षा जैसे मुद्दे पर फोकस कर रहे हैं। ठीक वैसे ही जैसे 1982 में मिड-डे मील योजना और 1984 में एमजी रामचंद्रन को अस्पताल के बिस्तर से चुनाव जीताने में सफल रही। हालांकि, फर्क यह है कि आज की तमिलनाडु राजनीति काफी बहुकोणीय और जटिल हो चुकी है।

क्या चुनाव में बजेगी विजय की 'सीटी'?

अब देखना यह है कि थलापति विजय बिहार में प्रशांत किशोर की तरह वोट काटकर सीमित रह जाते हैं, या ओवैसी की तरह निर्णायक फैक्टर बनते हैं, या फिर MGR की राह पर चलते हुए इतिहास रच देते हैं। तमिलनाडु में 'विजय फैक्टर' का असली लिटमस टेस्ट 2026 के नतीजे होंगे।

क्या वे एमग्रआर (MGR) की तरह सत्ता पर काबिज होंगे या रजनीकांत की तरह मैदान छोड़ने को मजबूर होंगे? फिलहाल, उनकी रैलियों की भीड़ ने द्रविड़ किलों की दीवारों पर दस्तक दे दी है।

सीएम योगी को ऐसे हंसते हुए नहीं देखा होगा कभी, सपा की ऐसी ली मौज, पूरा सदन हो गया लोटपोट

शुक्रवार को विधानसभा में सीएम योगी ने समाजवादी पार्टी की सरकार में रहे शिक्षा मंत्री का एक भाषण का किस्सा सुनाया, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता सेना बिस्मिल का जिक्र किया था. सीएम योगी ने कहा, 'इनके शिक्षा मंत्री, इनकी सरकार में. अंधेर नगरी चौपट राजा. यही तो कहते हैं.'

(जीएनएस)।

लखनऊः उत्तर प्रदेश विधानसभा में फिलहाज बजट सत्र चल रहा है. बीते शुक्रवार को विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा की गई. इस दौरान नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे ने योगी सरकार को अलग-अलग मुद्दे पर घेरने की कोशिश की. हालांकि जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपना संबोधन शुरू किया तो समाजवादी पार्टी पर

जमकर निशाना साधा और कुछ पुराने किस्से भी सुनाए, जिसको लेकर विधानसभा में जमकर ठहाके लगे. सीएम योगी भी किस्सा सुनाते हुए खिलखिलाकर हंस पड़े.

शुक्रवार को विधानसभा में सीएम योगी ने समाजवादी पार्टी की सरकार में रहे शिक्षा मंत्री का एक भाषण का किस्सा सुनाया, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता सेना बिस्मिल का जिक्र किया था. सीएम योगी ने कहा, 'इनके शिक्षा मंत्री, इनकी सरकार में. अंधेर नगरी चौपट राजा. यही तो कहते हैं. इसी को कहते हैं. वो कहते हैं कि बिस्मिल्ला खां को तो अभी कोई पुरस्कार तो मिला था और उनको फांसी क्यों हो गई है. तो नीचे से एक सज्जन ने कहा, कहा कि साहब ये बिस्मिल्ला खां नहीं ये पंडित राम प्रसाद बिस्मिल हैं. कहा कि तू जरूर भाजपाई होगा. कहा कि भाग हमारे कार्यक्रम से.'

बता दें कि शुक्रवार को सीएम योगी करीब 2 घंटे 41 मिनट तक बोले थे. इस दौरान उन्होंने अपने कार्यकाल में हो रहे विकास कार्यों का जिक्र किया.

कौन हैं बुर्के वाली शिवभक्त तमन्ना? हर-हर महादेव के जयकारे लगाते हरिद्वार से गंगा जल भरकर कांवड़ लेकर निकली

(जीएनएस)।

महाशिवरात्रि की तैयारियों के बीच उत्तर प्रदेश में आस्था और भाईचारे की एक अलग ही मिसाल देखने को मिली है। बुर्के में एक मुस्लिम महिला हरिद्वार से गंगाजल लेकर पैदल कांवड़ यात्रा पर अपने संभल स्थित गांव के लिए निकली है। बम-बम भोले के जयकारे लगाते हुए ये मुस्लिम महिला शिवरात्रि के अवसर पर अपने गांव पहुंचेगी और हरिद्वार से लाए गंगजल से भगवान शिव का जलाभिषेक करेगी।

दरअसल, इस महिला का नाम तमन्ना मलिक है और ये हरिद्वार से गंगाजल लेकर अपने पैतृक गांव बदनपुर बस्सी (संभल) कांवड़ लेकर लौट रही हैं। ये मुस्लिम महिला 100 से अधिक शिवभक्तों के जत्थे के साथ 'बोल भोले, हर-हर महादेव' के जयकारे लगाती हुई आगे बढ़ रही हैं, और बीच-बीच में 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप भी करती हैं।

बुर्के वाली शिवभक्त तमन्ना पर लोगों ने बरसाए फूल

रास्ते में बुर्के में कांवड़ लाती तमन्ना को देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ उमड़ रही है। बुर्के वाली शिवभक्त मुस्लिम महिला हरिद्वार से पावन गंगाजल लेकर कांवड़ यात्रा करते हुए बिजनौर जब पहुंची हैं तो रास्ते में नूरपुर, फीना और रतनगढ़ कस्बों में लोगों ने इस शिवभक्त पर फूल बरसा कर स्वागत किया। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

पुलिस कर रही शिवभक्त तमन्ना की सुरक्षा

इस अनोखी यात्रा को देखते हुए पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। बिजनौर पुलिस ने तमन्ना मलिक को सुरक्षा घेरे में जिले की सीमा पार कराई। रास्ते में स्थानीय हिंदू संगठनों ने फूलों की वर्षा कर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, वहीं कई महिलाएँ उन्हें दस, बीस, पचास या सौ रुपये देकर सहयोग और हौसला बढ़ा रही हैं। कुछ हिंदू संगठन के सदस्य भी उनके साथ यात्रा में चल रहे हैं ताकि रास्ते में कोई दिक्कत न आए।

कौन है बुर्के वाली तमन्ना?

तमन्ना उत्तर प्रदेश के संभल जिले के असमोली थाना क्षेत्र के बदनपुर बस्सी गांव की रहने वाली हैं। उन्होंने कुछ साल पहले गाँव के ही रहने वाले अमन त्यागी से लव मैरिज की थी और अब वो गांव में ही अपने पति और ससुराल साथ रहती हैं। उन्होंने बताया कि इस कांवड़ यात्रा का फैसला उन्होंने अपने पति और ससुराल वालों की सहमति से लिया है। रिपोर्टों के अनुसार, उनके परिवार के कुछ सदस्य और सैकड़ों अन्य कांवड़िये भी उनके साथ यात्रा में हैं, और कुछ रिपोर्ट के अनुसार इनके दो बेटे भी हैं।

तमन्ना को कहां से मिली प्रेरणा, क्यों लिया कांवड़ यात्रा का संकल्प

तमन्ना मलिक ने बताया कि वह वर्षों से कांवड़ यात्रा करते श्रद्धालुओं को देखकर प्रेरित हुई थीं। यही वजह है कि इस बार उन्होंने खुद यह कठिन यात्रा करने का निर्णय लिया। हरिद्वार से संभल तक करीब 220 किलोमीटर पैदल चलकर वह झेमनाथ शिव मंदिर में गंगाजल अर्पित करेंगी।

सूर्या ने पाकिस्तान को ललकारा, अभिषेक शर्मा को लेकर बयान पर सलमान अली को करारा जवाब

(जीएनएस)।

भारत और पाकिस्तान के बीच T20 World Cup 2026 में होने वाले मुकाबले को लेकर दोनों टीमों ने कमर कस ली है। रविवार को दोनों टीमों के बीच जोरदार टक्कर होने वाली है। सलमान अली आगा ने प्रेस वार्ता में टीम इंडिया को चुनौती देते हुए अभिषेक शर्मा को खिलाने की मांग की थी। इसका जवाब देने की बारी सूर्यकुमार यादव की थी। भारतीय कप्तान ने कन्फर्म कर दिया कि अभिषेक कल खेलेंगे।

सूर्या ने पाक के खिलाफ मैच को लेकर कहा कि हम हर मैच के लिए पूरी तरह तैयार थे। इस मुकाबले के लिए हमारी फ्लाइट्स पहले ही बुक हो चुकी थीं। हमारा पूरा ध्यान सिर्फ तैयारी पर था। हाँ, अगर सलमान (पाकिस्तानी कप्तान) चाहते हैं कि कल अभिषेक शर्मा खेलें, तो बिल्कुल, हम उन्हें कल जरूर खिलाएंगे।

टीम इंडिया की बैटिंग पर सूर्यकुमार यादव ने कहा कि हमारी शुरूआत थोड़ी लड़खड़ाती रही, यह सच्चाई है और इससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। इसके लिए कोई बहाना भी नहीं है। सभी खिलाड़ियों ने काफी क्रिकेट खेला है, इसलिए मुश्किल पिच पर बल्लेबाजों के पास अपनी स्पष्ट रणनीति होनी चाहिए। हमने अच्छी शुरूआत की थी, लेकिन बीच में थोड़ी रुकावट आई। हालांकि बाद में हमने संभलकर वापसी की। यही तो टी20 क्रिकेट की खासियत है-यहां मैच का रुख कभी भी बदल सकता है।

सूर्यकुमार यादव को टॉस के समय सलमान आगा से हाथ मिलाने का सवाल पूछा गया तो, उन्होंने कहा कि यह हम टॉस के समय देखेंगे। आप 24 घंटे का इंतजार करो। कुलदीप यादव को लेकर पूछे गए सवाल पर सूर्या ने कहा कि आप चाहते हैं कि उनको खिलाया जाए, तो ठीक है वह खेलेंगे।

सूर्यकुमार यादव ने कहा कि टीम का पूरा ध्यान अपने प्रदर्शन पर है, न कि सामने वाली टीम पर। उनका मानना है कि हाल के मैचों में जिस आत्मविश्वास और अंदाज में भारत ने खेल दिखाया है, उसी स्तर को आगे भी बनाए रखना लक्ष्य है। उन्होंने जोर देकर कहा कि टीम अपनी मजबूतियों के अनुसार रणनीति बना रही है और उसी पर अमल करना चाहती है। विरोधी टीम क्या कर रही है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। आखिरकार जीत उसी की होगी जो मैदान पर बेहतर खेल पेश करेगा, और यही सबसे अहम बात है।

टीम इंडिया में बदलाव

गौरतलब है कि संजू सैमसन को अभिषेक शर्मा की जगह पिछले मैच में खेलने का मौका मिल गया था लेकिन इस बार अभिषेक शर्मा के आने से सैमसन को बाहर किया जाएगा। टीम इंडिया में बदलाव बिलकुल तय दिख रहा है।

क्या है उस्मान तारिक के गेंदबाजी एक्शन का पूरा सच? दो कोहनी या चकिंग छिपाने का नया पैंतरा

(जीएनएस)।

उस्मान तारिक के गेंदबाजी एक्शन को लेकर जारी विवाद अब एक दिलचस्प मोड़ पर आ गया है। भारत के खिलाफ होने वाले महत्वपूर्ण मुकाबले से ठीक पहले तारिक का यह दावा कि उनके हाथ की बनावट सामान्य इंसानों से अलग है और उनके हाथ में दो कोहनियां (एल्बो) हैं, खेल जगत में चर्चा का विषय बना हुआ है। हालांकि, यह बयान जितना अनोखा है, उतना ही संदेह के घेरे में भी है।

उस्मान तारिक का यह कहना कि उनकी शारीरिक बनावट कुदरती तौर पर अलग है, पहली नजर में एक रक्षात्मक बयान लगता है। आमतौर पर जब किसी गेंदबाज के एक्शन पर चकिंग का आरोप लगता है, तो वह इसे अपनी हाइपर-एक्सटेंशन या कुदरती बनावट का नाम देकर बचाने की कोशिश करता है। दो कोहनियां होने की बात वैज्ञानिक और तार्किक रूप से गले नहीं उतरती। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज के दौरान भी जब उन पर सवाल उठे थे, तब भी उनके एक्शन में स्पष्ट रूप से थ्रो की झलक देखी गई थी।

फुल स्लीव शर्ट का रहस्य

तारिक की गेंदबाजी से जुड़ा एक बड़ा संदेह उनकी ड्रेसिंग को लेकर भी है। वह हमेशा फुल स्लीव यानी पूरी बाजू की शर्ट पहनकर गेंदबाजी करते हैं। क्रिकेट के इतिहास में हमने देखा है कि जिन गेंदबाजों के एक्शन पर संदेह होता है, वे अक्सर अपनी कोहनी के मुड़ाव को छिपाने के लिए फुल स्लीव का सहारा लेते हैं। अगर तारिक का दावा सही है कि उनके हाथ में दो कोहनियां हैं, तो कायदे से उन्हें हाफ बाजू की शर्ट पहनकर इसे साबित करना चाहिए। पूरी बाजू की शर्ट पहनना इस बात की ओर इशारा करता है कि शायद वह अपनी कोहनी के अवैध झटके या थ्रो को दुनिया की नजरों से ओझल रखना चाहते हैं।

भारत के खिलाफ मैच और अंपायरों पर दबाव

भारत के साथ होने वाले हाई-वोल्टेज मैच से ठीक पहले इस तरह का बयान देना एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा हो सकता है। यह मुमकिन है कि तारिक और पाकिस्तानी खेमा यह जानता हो कि इस मैच में अंपायरों की पैनी नजर उनके एक्शन पर होगी। ऐसे में दो कोहनियों वाला बयान देकर उन्होंने पहले ही एक माहौल बनाने की कोशिश की है ताकि अगर अंपायर उन पर कोई कार्रवाई करें, तो वह इसे अपनी शारीरिक मजबूरी या कुदरती बनावट बताकर सहानुभूति हासिल कर सकें।

RNI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

गलत जांच रिपोर्ट लगाने वालों पर तो दर्ज की जाए एफआईआर... सीएम योगी की अधिकारियों को दोटूक

सीएम योगी आदित्यनाथ ने शनिवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन के दौरान लोगों की समस्याएं सुनीं. उन्होंने सभी को आश्वस्त किया कि किसी को भी घबराने की आवश्यकता नहीं है. हर समस्या का वह प्रभावी निस्तारण कराएंगे. इसे लेकर उन्होंने प्रशासन व पुलिस के अधिकारियों को मौके पर ही दो टूक समझाया कि जनता की समस्याओं का समयबद्ध, निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें.

गोरखपुरः (जीएनएस)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ किसी भी तरह की लापरवाही सहन नहीं करने के मूड में हैं. उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि किसी मामले में जांच के दौरान यदि गलत रिपोर्ट लगाई जाती है तो संबंधित के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाए. हर मामले का निष्पक्ष जांच करके ही उसका निस्तारण होना चाहिए. किसी भी मामले में लापरवाही अक्षम्य होगी.

सीएम योगी ने शनिवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन के दौरान लोगों की समस्याएं सुनते हुए ये निर्देश प्रशासन व पुलिस अफसरों को दिए. गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के बाहर आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने करीब 150 लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं. उन्होंने सभी को आश्वस्त किया कि किसी को भी घबराने की आवश्यकता नहीं है. हर समस्या का वह प्रभावी निस्तारण कराएंगे. इसे लेकर उन्होंने प्रशासन व पुलिस के अधिकारियों को मौके पर ही दो टूक समझाया कि जनता की समस्याओं का समयबद्ध, निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें.

जनता दर्शन में कुछ मामले ऐसे भी आए थे, जिनमें यह शिकायत की गई कि प्रकरण में गलत रिपोर्ट लगा दी गई है. इस पर मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि पता लगाकर गलत रिपोर्ट लगाने वाले के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाए. उन्होंने कहा कि पीड़ितों की मदद में शिथिलता या लापरवाही कतई नहीं होनी चाहिए. जनता की समस्याओं के समाधान में किसी तरह की हीलाहवाली हुई तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई भी तय है. किसी पीड़ित की समस्या के समाधान में अगर कहीं भी कोई दिक्कत आ रही है तो उसका पता लगाकर निराकरण कराया जाए और किसी स्तर पर जानबूझकर कर प्रकरण को लंबित रखा गया है तो संबंधित के खिलाफ की कड़ी कार्रवाई की जाए. उन्होंने जमीन कब्जाने की शिकायतों पर विधि सम्मत कठोर कदम उठाने का निर्देश दिया.

बच्चों को दुलारा

हर बार की तरह इस बार भी जनता दर्शन में कुछ लोग इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर पहुंचे थे. इस पर सीएम योगी ने अधिकारियों से कहा कि जल्द से जल्द अस्पताल के इस्टीमेट की प्रक्रिया पूर्ण कराकर शासन को उपलब्ध करा दें. इलाज के लिए मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से पर्याप्त मदद की जाएगी. जनता दर्शन में परिजनों के साथ आए बच्चों को प्यार-दुलारकर सीएम योगी ने उन्हें चॉकलेट दिया और खूब पढ़ने के

'यूपी में विकास हो रहा, लेकिन घुटन नहीं', सीएम योगी ने दिल्ली की हवा की तुलना 'गैस चैंबर' से की

देश की राजधानी का ज़िक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा कि दिल्ली की हवा बेहद खराब स्तर पर पहुंच गई है। उन्होंने कहा, 'दिल्ली की स्थिति देखिए, ऐसा लगता है जैसे वह गैस चैंबर बन गई हो। वहां सांस लेना मुश्किल हो जाता है और आंखों में जलन होने लगती है। डॉक्टर अस्थमा के मरीजों, बुजुर्गों और बच्चों को घर के अंदर रहने की सलाह देते हैं। यह कैसी जिंदगी है

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को दिल्ली की हवा की गुणवत्ता की तुलना 'गैस चैंबर' से की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के लोग खुद को खुशकिस्मत मान सकते हैं, क्योंकि विकास कार्यों के चलते रहने के बावजूद राज्य में लोगों को अपेक्षाकृत साफ वातावरण मिल रहा है।

गोरखपुर में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि पर्यावरण का बिगड़ना आज पूरी दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती बन चुका है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विकास के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा का ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी है। उनके अनुसार, सही प्रगति वही है जिसमें विकास और प्रकृति के संरक्षण के बीच संतुलन बनाया जाए।

सीएम योगी ने कही ये बात

उन्होंने कहा, 'यहां का वातावरण साफ है और प्रदूषण नहीं के बराबर है। जहां प्रदूषण कम होता है, वहां बीमारियां भी कम फैलती हैं। प्रदूषण का सीधा असर फेफड़ों पर पड़ता है। जब शरीर को सही मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिलती, तो इसका बुरा प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है।

राज्य सरकार की ओर से जारी आधिकारिक बयान के अनुसार, मुख्यमंत्री जंगल कौड़िया में नवनिर्मित और सुधारे गए ब्लॉक विकास अधिकारी (BDO) कार्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम में बोल रहे थे।

दिल्ली पर कही ये बात

देश की राजधानी का ज़िक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा कि दिल्ली की हवा बेहद खराब स्तर पर पहुंच गई है। उन्होंने कहा, 'दिल्ली की स्थिति देखिए, ऐसा लगता है जैसे वह गैस चैंबर बन गई हो। वहां सांस लेना मुश्किल हो जाता है और आंखों में जलन होने लगती है। डॉक्टर अस्थमा के मरीजों, बुजुर्गों और बच्चों को घर के अंदर रहने की सलाह देते हैं। यह कैसी जिंदगी है?ह्व उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि अगर पर्यावरण की सुरक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया, तो दूसरे शहरों में भी ऐसे हालात बन सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, 'हम सौभाग्यशाली हैं कि उत्तर प्रदेश में विकास कार्य चल रहे हैं, लेकिन यहां दम घुटने जैसा माहौल नहीं है।" Cenftral Pollution Control Board के आंकड़ों के अनुसार, शनिवार सुबह दिल्ली की एयर क्वालिटी 'खराब' श्रेणी में दर्ज की गई। सुबह 9 बजे एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) 211 था।

एसटीएफ ने लखनऊ में पकड़ा 8 क्विंटल गांजाःस्कॉर्पियो से एस्कॉर्ट करके ट्रक से ढोते थे; उड़ीसा से छिपाकर लाए, 4 गिरफ्तार

(जीएनएस)।

लखनऊ में STF को दूसरे राज्यों से मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह के 4 तस्करों को गिरफ्तार किया है। तस्कर लखनऊ से करीब 1200 किमी दूर उड़ीसा से गांजा लाकर राजधानी समेत कई जिलों में इसकी सप्लाई करते थे। गांजा लखनऊ पहुंचने के बाद गाड़ी से एस्कॉर्ट करते हुए पुलिस चेकिंग से बचाते थे। STF इनसे जुड़े अन्य नेटवर्क को खंगाल में जुटा है।

पुलिस उपाधीक्षक दीपक कुमार सिंह ने बताया कि रळक्ष को सूचना मिली उड़ीसा के मलखानगिरी से बड़ी मात्रा में गांजा लादकर एक ट्रक लखनऊ आने वाला है। सूचना पर ट्रक नंबर NL-01-AA-0511 सुल्तानपुर के रास्ते लखनऊ पहुंचने वाला था। ट्रक के आगे बिना नंबर की काले रंग की स्कॉर्पियो चल रही थी थी।

स्कॉर्पियों में बैठे लोग पुलिस चेकिंग की सूचना ट्रक चालक को दे रहे थे। ट्रक से गांजा उतारकर शालीमार बंधा रोड पर बंटवारा होना था। रळक्ष टीम ने मौके पर पहुंचकर ट्रक और स्कॉर्पियो की तलाशी ली। जांच में भारी मात्रा में गांजा बरामद हुआ। मौके से 4 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया।

आरोपियों की पहचान

कमरियाबाग बाराबंकी निवासी मयंक जायसवाल उर्फ सूरज, लखनऊ के बख्शी का तालाब निवासी जीतू श्रीवास्तव उर्फ दद्दा, शक्तिनगर इंदिरानगर निवासी पारितोष त्रिपाठी और नालंदा बिहार निवासी कुलदीप यादव के रूप में हुई।

ट्रेलर की चेसिस में बनाई थी गुप्त कैविटी

पूछताछ में ट्रक चालक कुलदीप यादव ने बताया कि वह जीतू श्रीवास्तव के कहने पर उड़ीसा से गांजा लाता था। गांजा लाने के लिए बिना बॉडी वाले ट्रेलर ट्रक का इस्तेमाल किया जाता था। ट्रेलर की चेसिस के ऊपर बने प्लेटफॉर्म में गुप्त कैविटी तैयार की गई थी। जिसमें 5 से 8 क्विंटल तक गांजा आसानी से छिपाया जाता था।

गांजा लोड होने के बाद ट्रक का नंबर बंद कर दिया जाता था और इंटरनेट कॉल के जरिए संपर्क रखा जाता था। अब तक वह 15 से 20 बार जीतू के लिए उड़ीसा से गांजा ला चुका है।

कई जिलों में फैला था नेटवर्क

मुख्य आरोपी जीतू श्रीवास्तव ने पूछताछ में बताया कि वह मयंक श्रीवास्तव उर्फ सूरज, रमन, पारितोष त्रिपाठी और जसवंत शर्मा उर्फ डोरेमॉन के साथ मिलकर तस्करी का नेटवर्क चलाता था।

गिरोह लखनऊ, सीतापुर, बाराबंकी, गोण्डा, बहराइच समेत कई जिलों में मांग के अनुसार गांजा सप्लाई करता था। पैसा मिलने के बाद ट्रक और ड्राइवर की व्यवस्था कर उड़ीसा भेजा जाता था। लखनऊ पहुंचते ही ड्राइवर सूचना देता था।

उसके बाद आरोपी अपनी गाड़ी से ट्रक को तय स्थान तक एस्कॉर्ट करते थे। जांच में सामने आया है कि गांजा तस्करी से मील रुपए से डाला और एक माइक्रा कार खरीदी थी। जिनका उपयोग सप्लाई में किया जाता था। एसटीएफ अन्य आरोपियों और नेटवर्क से जुड़े लोगों के बारे में गहन छानबीन कर रही है।

92.50 लाख का माल बरामद

तस्करों के पास से 3.70 क्विंटल गांजा मिला है, जिसकी कीमत लगभग 92.50 लाख रुपए है। ट्रक और स्कार्पियो जब्त की गई है। तस्करों के पास से पांच मोबाइल और 9300 रुपए मिले हैं।

लखनऊ में मांझे की चपेट में आने से बाइक सवार का गला कटा, नीचे गिरने पर पत्नी और बेटी घायल

लखनऊ में जानलेवा मांझे का कहर जारी है, मुख्यमंत्री के आदेशों के बावजूद घटनाएं नहीं रुक रहीं।

लखनऊ, (जीएनएस)। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण के आदेशों के बावजूद शहर में जानलेवा मांझे पर लगाम नहीं लग पा रही है। नतीजतन, आए दिन लोग इसकी चपेट में आने से घायल हो रहे हैं।

शनिवार को एक बार फिर मांझे की चपेट में आने से बाइक सवार की गर्दन कट गई। बाइक पर पीछे बैठी उनकी पत्नी और चार महीने की बच्ची सड़क पर गिरने से घायल हो गई। गनीमत रही कि किसी को गंभीर चोटें नहीं आई। पीड़ित ने मांझे की बिक्री और इसके इस्तेमाल पर रोक लगाने की मांग की है।

हुसैनगंज निवासी मुशर्रफ मजदूरी करते हैं। मुशर्रफ ने बताया कि शनिवार की दोपहर वह बाइक से पत्नी नेहा और चार महीने की बेटी परवाह को लेकर ऐशबाग पुल पर जा रहे थे। पुल के ऊपर अचानक उनके गले में धारदार मांझा आकर फंस गया। वह कुछ समझ पाते इसके पहले ही मांझे ने गर्दन रेत दी।

वह जब तक बाइक रोकते तब तक मांझे ने गले पर निशान बना दिया। इस बीच उनकी बाइक अनियंत्रित हो गई। नेहा और गोद में बैठी उनकी बेटी सड़क पर गिर गए। दोनों को मामूली चोटें आई हैं। आसपास मौजूद लोगों ने उन्हें उठाया।

इसके बाद उन्हें उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। अस्पताल से प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। तीनों की हालत खतरे से बाहर है। मुशर्रफ ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि घटना में हम लोगों की जान बच गई। उन्होंने पुलिस और प्रशासन से मांझे पर रोक लगाने की मांग की है।

इन इलाकों में हो रही सबसे ज्यादा घटनाएं

मांझे से कटने की सबसे ज्यादा घटनाएं बाजारखाला ओवरब्रिज, ऐशबाग ओवर ब्रिज, नया और पुराना पक्का पुल, ग्रीन कारीडोर, सहारा सिटी ओवर ब्रिज, शहीद पथ, बालागंज के आसपास हरदोई रोड का इलाका।

पहले भी हो चुकी हैं घटनाएं

23 मई 2023: ठाकुरगंज के पीर बुखारा इलाके में चाइनीज मांझे से युवक हुआ चोटिल।

27 मार्च 2024: हजरतगंज कोतवाली के एसएसआइ का अंगूठा ईदगाह रोड पर मांझे से कट गया।

23 फरवरी 2025: बीबीडी इलाके में मांझे से बाइक सवार अमन घायल।

3 सितंबर 2025: हैदरगंज में व्यवसायी आसिम मार्शल दो बेटियों को लेकर स्कूल से घर जा रहे थे। मांझे की चपेट में आकर घायल हुए।

तीन फरवरी 2026: दुबग्गा निवासी 33 वर्षीय मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव मोहम्मद शोएब के गले में हैदरगंज ओवरब्रिज पर मांझा फंसा, गला कटने से मौत

चार फरवरी 2026: गोमती नगर विस्तार में मलेसेमऊ गांव के पास शहीद पथ पर पूर्व एयरफोर्स कर्मी बृजेश राय मांझे की चपेट में आए। होठ दाढ़ी का निचला हिस्सा कटा।

13 फरवरी 2026: इंदिरा नगर निवासी ध्रुव नारायण पांडेय कैंट इलाके में मांझे से घायल हुए

संकल्प यात्रा से सत्ता को चुनौतीः ग्वालियर हाईकोर्ट में अंबेडकर प्रतिमा के लिए मैदान में उतरी एएसपी-भीम आर्मी

(जीएनएस)।

ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में संविधान निमार्ता बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा स्थापना का प्रश्न अब केवल एक स्मारक का मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, अधिकार और सत्ता संरचना के टकराव का प्रतीक बनता जा रहा है। आजाद समाज पार्टी (ASP) और भीम आर्मी ने साफ कर दिया है कि यह लड़ाई अब आर-पार की होगी।

इसी संघर्ष को निर्णायक मोड़ देने के लिए "संकल्प यात्रा" के दूसरे चरण की औपचारिक शुरूआत कर दी गई है। यात्रा के संयोजक, आजाद समाज पार्टी-भीम आर्मी के राष्ट्रीय कोर कमेटी सदस्य एवं उद्धरर के संस्थापक दामोदर यादव मंडल ने भोपाल में आयोजित पत्रकारवार्ता में ऐलान किया कि 15 मार्च को ग्वालियर में एक लाख कार्यकर्ताओं के साथ पहुंचकर ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में बाबा साहेब की प्रतिमा स्थापित की जाएगी।

"मूर्ति नहीं, अधिकारों का प्रतीक है अंबेडकर प्रतिमा"

दामोदर यादव मंडल ने दो टूक कहा कि बाबा साहेब की प्रतिमा उनके लिए केवल पत्थर या धातु की आकृति नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र भारत में दलित, पिछड़े और वंचित वर्गों के

अधिकारों का जीवंत प्रमाण होगी। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रतिमा स्थापना के विरोध के पीछे सरकार और उसके संरक्षण में पल रहे मनुवादी सोच के लोग हैं, जिन्होंने इस मुद्दे को जानबूझकर वर्ग संघर्ष की स्थिति में धकेला है।

यादव ने कहा कि बाबा साहेब ने सामाजिक समरसता और समानता की नींव रखी थी। ऐसे में हाईकोर्ट परिसर जैसे संवैधानिक संस्थान में उनकी प्रतिमा का विरोध करना, संविधान की आत्मा का विरोध है।

प्रदेशभर में सभाएं, नुक्कड़ बैठकों से बनेगा जनदबाव

संकल्प यात्रा के माध्यम से प्रदेशभर में 50 बड़ी सभाएं और 100 से अधिक नुक्कड़ सभाएं आयोजित की जाएंगी। इन सभाओं का मकसद सिर्फ प्रतिमा स्थापना नहीं, बल्कि बहुजन समाज को राजनीतिक और सामाजिक रूप से एकजुट करना है। ASP ने साफ किया है कि यह यात्रा उन क्षेत्रों से भी गुजरेगी, जिन्हें राजनीतिक और वैचारिक रूप से प्रभावशाली माना जाता है।

दिग्विजय सिंह और धीरेंद्र शास्त्री के गढ़ में भी रैलियां, यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह के गढ़ और कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री के प्रभाव क्षेत्र में भी विशाल रैलियां की जाएंगी। दामोदर यादव मंडल ने कहा कि दिग्विजय सिंह के बेटे जयवर्धन द्वारा संशोधित UGC एक्ट के विरोध को लेकर भ्रम फैलाया गया है। अरढ वहां जाकर बताएगी कि UGC का विरोध किसी एक कानून का नहीं, बल्कि पूरे OBC वर्ग के अधिकारों का विरोध है।

वहीं धीरेंद्र शास्त्री के क्षेत्र में रैली को लेकर पार्टी का कहना है कि यह आडंबर, पाखंड और सामाजिक गैर-बराबरी के खिलाफ वैचारिक संघर्ष का हिस्सा होगा।

UGC के मुद्दे पर फिर सड़कों पर उतरने का ऐलान

अरढ और भीम आर्मी ने स्पष्ट किया है कि वक्रछ एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगाए गए स्टे के विरोध में आंदोलन और तेज होगा। प्रदेश प्रभारी विनोद अंबेडकर और युवा प्रदेश अध्यक्ष अनिल गुर्जर ने आरोप लगाया कि पहले आंदोलन को पुलिस ने वाटर कैनन और लाठीचार्ज के जरिए दबाने की कोशिश की, लेकिन इससे आंदोलन और मजबूत हुआ है।

उन्होंने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद चंद्रशेखर आजाद के निर्देश पर CM हाउस के घेराव सहित बड़े आंदोलन की तैयारी की जा रही है और हर हाल में UGC लागू करवाया जाएगा। यात्रा को मिली राजनीतिक और वैचारिक धार, संकल्प यात्रा के दूसरे चरण की शुरूआत पूर्व विधायक आरडी प्रजापति और भीम आर्मी के वरिष्ठ नेता अमर सिंह ने हरी झंडी दिखाकर की। इस मौके पर आरडी प्रजापति ने कहा कि उन्होंने आडंबर और पाखंड के खिलाफ जो संघर्ष शुरू किया था, उसे अब दामोदर मंडल पूरी ताकत से आगे बढ़ा रहे हैं। इसी कारण यात्रा के दौरान उन इलाकों में भी रैली की जाएगी, जहां से सामाजिक पाखंड को बढ़ावा मिलता रहा है।

राजनीतिक संकेत और आने वाले दिन, ASP-भीम आर्मी की यह संकल्प यात्रा केवल एक मांग या आंदोलन नहीं, बल्कि प्रदेश की राजनीति में बहुजन एजेंडे को केंद्र में लाने की कोशिश के रूप में देखी जा रही है। ग्वालियर हाईकोर्ट में अंबेडकर प्रतिमा, UGC एक्ट और CM हाउस घेराव-तीनों मुद्दे मिलकर सरकार के लिए आने वाले दिनों में बड़ी चुनौती बन सकते हैं।

लखनऊ, नोएडा और गाजियाबाद में बनेंगे वर्किंग विमेन हॉस्टल, 4000 महिलाओं को मिलेगा सुरक्षित आवास

योगी सरकार शहरी क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के लिए सुरक्षित और किफायती आवास हेतु आठ श्रमजीवी महिला छात्रावासों का निर्माण कर रही है।

(जीएनएस)।

लखनऊ। शहरी क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में आने वाली कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित और किफायती आवास उपलब्ध कराने के उद्देश्य से योगी सरकार ने आठ श्रमजीवी महिला छात्रावासों के निर्माण की प्रक्रिया तेज कर दी है। कुल स्वीकृत धनराशि का 66 प्रतिशत प्रथम किस्त के रूप में जारी किया जा चुका है। इससे निर्माण कार्य को गति मिली है। भारत सरकार की एसएएससीआई योजना के अंतर्गत उत्तर प्रदेश में यह परियोजना संचालित की जा रही है, जिसके लिए कुल 382 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

सीएंडडीएस को दी गई जिम्मेदारी

प्रदेश सरकार ने अप्रैल 2025 में सीएंडडीएस को इस परियोजना का कार्यदायी संस्थान नामित किया है। विभागीय स्तर पर भूमि चिन्हांकन की प्रक्रिया पूरी कर संबंधित विभाग को हस्तांतरित कर दी गई है। लखनऊ में तीन, गौतमबुद्धनगर में चार और गाजियाबाद में एक समेत कुल आठ छात्रावासों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। प्रत्येक छात्रावास की क्षमता 500 महिलाओं की होगी। इस प्रकार कुल 4,000 कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित आवास सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

सुरक्षा और स्वच्छता पर जोर

इन छात्रावासों में सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ शौचालय, भोजनालय, सामान्य बैठक कक्ष तथा

अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उद्देश्य यह है कि रोजगार के लिए शहरों में आने वाली महिलाओं को सम्मानजनक और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में ठोस कदम

गाजियाबाद के सूर्यनगर क्षेत्र में प्रस्तावित छात्रावास के लिए आवश्यक अनुमति के लिए प्रक्रिया जारी है। संबंधित प्राधिकरणों से स्वीकृति प्राप्त होते ही वहां भी निर्माण कार्य पूर्ण गति से शुरू किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में महिलाएं विभिन्न उद्योगों, सेवा क्षेत्रों, निजी संस्थानों और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। आवास की कमी और सुरक्षा संबंधी चुनौतियां उनके सामने बड़ी समस्या बनती हैं। इस परियोजना के माध्यम से सरकार न केवल सुरक्षित आश्रय उपलब्ध करा रही है, बल्कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में ठोस कदम भी उठा रही है।

महिलाएं बनेंगी आत्मनिर्भर

यह योजना केंद्र और राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों का परिणाम है। योगी सरकार का फोकस स्पष्ट है कि आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़े और उन्हें कार्यस्थल के साथ-साथ आवासीय सुरक्षा भी सुनिश्चित हो। परियोजना को चरणबद्ध तरीके से समयसीमा के अंदर पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। निर्माण कार्य की नियमित निगरानी की जा रही है ताकि गुणवत्ता और तय समयसीमा का पालन सुनिश्चित हो सके।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस पहल से प्रदेश के शहरी श्रमबल को मजबूती मिलेगी और कामकाजी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी।

नॉर्थ और साउथ ब्लॉक बनेंगे म्यूजिम, जानें क्या है इसका सौ साल पुराना इतिहास

(जीएनएस)।

भारतीय राजनीति और केंद्रिय प्रशासन का ल्टीं१३ ईं३ कहे जाने वाले नॉर्थ और साउथ ब्लॉक अब एक नए अवतार में दुनिया के सामने होंगे। केंद्र सरकार ने इन ऐतिहासिक इमारतों को 'युगे युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय' में बदलने का निर्णय लिया है।

यह न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को सहेजेगा, बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय भी बनेगा। रायसीना हिल पर स्थित नॉर्थ और साउथ ब्लॉक की इमारतें सिर्फ पत्थर का ढांचा नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के निर्माण की गवाह हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा हाल ही में नए ढटड परिसर 'सेवा तीर्थ' का उद्घाटन किए जाने के बाद अब इन इमारतों को 'पब्लिक स्पेस' यानी संग्रहालय में बदलने की तैयारी पूरी हो चुकी है।

क्या था नॉर्थ और साउथ ब्लॉक?

नॉर्थ ब्लॉक और साउथ ब्लॉक, राष्ट्रपति भवन के ठीक सामने रायसीना हिल पर स्थित दो विशाल और भव्य इमारतें हैं। आजादी के बाद से ये इमारतें भारत की शासन व्यवस्था का केंद्र रही हैं। दशकों तक ये दोनों इमारतें भारत सरकार के सबसे शक्तिशाली कार्यालयों में से एक रही हैं।

साउथ ब्लॉक में प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO), रक्षा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय स्थित रहे। वहीं नॉर्थ ब्लॉक जहां गृह मंत्रालय और वित्त मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभाग संचालित होते थे। ये इमारतें 'सेंट्रल सेक्रेटेरिएट' (केंद्रीय सचिवालय) का हिस्सा हैं और राष्ट्रपति भवन के दोनों ओर स्थित हैं।

कब और किसने बनाया था

इन इमारतों का निर्माण ब्रिटिश शासनकाल में हुआ था। इन जुड़वां इमारतों का डिजाइन ब्रिटिश वास्तुकार सर हर्बर्ट बेकरने तैयार किया था। जहां एडविन लुटियंस ने राष्ट्रपति भवन और इंडिया गेट पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं बेकर ने इन सचिवालय भवनों और पुराने संसद भवन का निर्माण किया।

जहां वायसरॉय हाउस (अब राष्ट्रपति भवन), किंग्सवे (अब राजपथ/कर्तव्य पथ) और इंडिया गेट का डिजाइन एडविन लुटियन ने किया, वहीं नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक और गोलाकार संसद भवन का डिजाइन तैयार किया।

इनका निर्माण 1911 से 1930 के बीच हुआ और 1931 में दिल्ली को आधिकारिक राजधानी के रूप में उद्घाटन के समय ये पूरी तरह तैयार थीं।

वास्तुकला शैली के हिसाब से भी ये ब्लॉक बेहद महत्तवपूर्ण रही हैं। इन इमारतों में मुगल, राजपूताना और यूरोपीय शैली का मिश्रण हैं। इनमें लाल और गुलाबी बलुआ पत्थरों का उपयोग किया गया है, जो राजस्थान से लाए गए थे।

'जब मुख्यमंत्री बने तो 40 से ज्यादा मुकदमे...', शंकाराचार्य ने सीएम योगी पर लगाए गंभीर आरोप

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के बीच विवाद गहराता जा रहा है. सीएम के बयान पर अब शंकराचार्य ने जवाब दिया है.

(जीएनएस)।

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने शनिवार को कहा कि सनातन धर्म में, शंकराचार्य उस व्यक्ति को माना जाता है जो धर्म के लिए काम करता है. स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने वाराणसी में संवाददाताओं से कहा, 'जो कोई भी उनका (उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ) समर्थन करता है, वह शंकराचार्य है. जो कोई भी सनातन धर्म के बारे में बात करता है, वह शंकराचार्य बिल्कुल नहीं है. जो परिभाषा उन्होंने (आदित्यनाथ) बनाई है, वह आज से पहले कभी नहीं थी.'

अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा, 'सनातन धर्म में, शंकराचार्य उस व्यक्ति को माना जाता है जो सनातन धर्म के लिए काम करता है. सनातन धर्म का पहला विशेषण सत्य है. जो सच बोलता है, गायों की रक्षा करता है और सनातन धर्म की रक्षा करता है.'

अविमुक्तेश्वरानंद ने सीएम योगी पर लगाए आरोप

बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि, "नजीर है, आदित्यनाथ के ऊपर 40 से ज्यादा मुकदमे थे और जब वह मुख्यमंत्री बने तो सभी मुकदमे अपने ऊपर से हटवा लिए. ये कैसा कानून

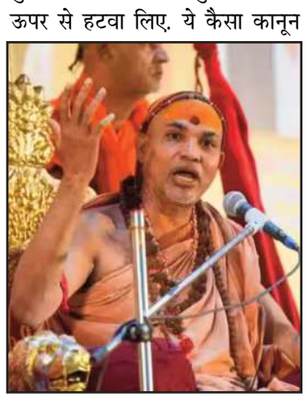

का पालन है? ये क्या कानून में लिखा है कि अगर कोई भी व्यक्ति बड़े पद पर पहुंच जाएगा तो उसके ऊपर से सारे मुकदमे हटा लिए जाएंगे? ये कहां लिखा है?"

सीएम योगी ने क्या कहा था?

दरअसल, योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को विधानसभा में एक बयान में कहा था कि हर कोई 'शंकराचार्य' की उपाधि का इस्तेमाल नहीं कर सकता. योगी ने इस बात पर भी बल दिया कि सभी कार्यक्रमों के दौरान धार्मिक मर्यादा और कानून का शासन बनाए रखा जाना चाहिए.

मुख्यमंत्री ने पिछले महीने प्रयागराज में आयोजित माघ मेले के दौरान स्नान के लिए जाते समय ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को पुलिस द्वारा रोके जाने से जुड़े विवाद पर पहली बार चुप्पी तोड़ते हुए शुक्रवार को कहा कि कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है.

कैम्पियरगंज में वानिकी यूनिवर्सिटी, युवाओं को नौकरी की गारंटीः योगी

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि कैम्पियरगंज में बनने जा रहे प्रदेश के पहले वानिकी एवं उद्यान विज्ञान विश्वविद्यालय की डिग्री युवाओं के लिए नौकरी की गारंटी सुनिश्चित करेगी।

युवाओं और किसानों के लिए अवसर

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस विश्वविद्यालय से डिग्री और डिप्लोमा लेने वाले युवाओं के लिए देश और दुनिया में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध होंगे। इसके साथ ही यह विश्वविद्यालय अन्नदाता किसानों की आमदनी बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह घोषणा उन्होंने जंगल कौड़िया ब्लॉक में पुनर्निर्मित बीडीओ कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद की।

गिद्धराज जटायु संरक्षण केंद्र का महत्व

सीएम योगी ने कैम्पियरगंज के गिद्धराज जटायु संरक्षण केंद्र का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में कृतज्ञता दिखाना अहम है। उन्होंने बताया कि माता सीता का हरण करने जा रहे रावण का पहला प्रतिकार गिद्धराज जटायु ने किया था। आज केमिकल और पेस्टिसाइड्स के कारण गिद्धराज की संख्या कम हो रही है। इसलिए उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए यह केंद्र बनाया गया।

विश्वविद्यालय और पर्यावरणीय चुनौतियां

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब कैम्पियरगंज में बनने वाला वानिकी विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण और वायु प्रदूषण नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण साबित होगा। उन्होंने दिल्ली में वायु प्रदूषण के हालात का उदाहरण देते हुए कहा कि इससे बच्चों और बुजुर्गों को घर से बाहर निकलने की सलाह दी जाती है। यह विश्वविद्यालय वनाच्छादन बढ़ाने और किसानों की आमदनी में वृद्धि के लिए नया प्रयास होगा।

गोरखपुर और प्रदेश में विकास

सीएम योगी ने गोरखपुर और प्रदेश में विकास की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए बताया कि खाद कारखाना चालू हो चुका है, बीआरडी मेडिकल कॉलेज उत्कृष्ट चिकित्सा केंद्र बन गया है, पिपराइच में चीनी मिल फिर से चालू हुई है और धुरियापार में कम्प्रेस्ड बायो गैस प्लांट लग चुका है। उन्होंने कहा कि गोरखपुर और प्रदेश में औद्योगिक प्रगति, रोजगार और गरीब कल्याण के काम तेजी से हो रहे हैं।

जंगल कौड़िया ब्लॉक का विकास और कनेक्टिविटी

मुख्यमंत्री ने बताया कि कालेसर-जंगल कौड़िया बाईपास बन जाने से लोग अब सिर्फ तीन-साढ़े तीन घंटे में लखनऊ पहुंच सकते हैं, जबकि चिउटहा से कुशीनगर का सफर सिर्फ आधे घंटे में पूरा होता है। क्षेत्र की प्रमुख सड़कें अब फोरलेन हैं। जंगल कौड़िया में पूज्य ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी की स्मृति में डिग्री कॉलेज बनाया गया है, जहां 2 हजार से अधिक विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे हैं। क्षेत्र में स्टेडियम, कुश्ती प्रशिक्षण और अभ्यास की सुविधा भी उपलब्ध है।

'खुद का मुकदमा हटवाने वाले भी अविमुक्तेश्वरानंद पर...', सीएम योगी के बयान पर अखिलेश का पलटवार

(जीएनएस)।

प्रयागराज माघ मेले का कल यानि कि 15 फरवरी को महाशिवरात्रि स्नान के बाद समापन हो जाएगा. लेकिन मौनी अमावस्या पर अविमुक्तेश्वरानंद और मेला प्राधिकरण के बीच शुरू हुआ विवाद खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है. इस विवाद के बाद ही इस पर राजनीति गर्म है. शुक्रवार को अविमुक्तेश्वरानंद को लेकर मुख्यमंत्री योगी ने विधानसभा में एक बयान दिया था. वहीं अब इस पर अखिलेश यादव ने पलटवार किया है.

अखिलेश यादव ने अविमुक्तेश्वरानंद पर दिए गए योगी के बयान को अपमानजनक बताया है. उन्होंने कहा कि परम पूज्य शंकराचार्य के बारे में घोर अपमानजनक अपशब्द बोलना, शाब्दिक हिंसा है और पाप भी. ऐसा कहने वाले के साथ-साथ उनको भी पाप पड़ेगा जिन्होंने चापलूसी में मेजें थपथपाई हैं. जब बीजेपी के विधायक सदन के बाहर जाएंगे और जनता का सामना करेंगे तो जनता सड़क पर उनका सदन लगा देगी.

अखिलेश यादव यहीं नहीं रुके, उन्होंने कहा कि जो महाकुंभ की मौतों पर सच्चे आंकड़े नहीं बताते हैं, कैश में मुआवजा देकर उसमें भी भ्रष्टाचार का रास्ता निकाल लेते हैं. जिन तक मुआवजा नहीं पहुंचा, उनका पैसा कहां गया, ये नहीं बताते हैं. अपने ऊपर लगे मुकदमे हटवाते हैं. वो किसी और के 'धर्म-पद' पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार नहीं रखते हैं.

अपने बयान में उन्होंने 'कानून का शासन' बोल दिया, जैसे ही इस बात पर उनका ध्यान जाएगा वो 'विधि का शासन' बोलने के लिए क्या दुबारा सदन बुलाएंगे या इसके लिए एक टांग पर खड़े होकर 'लड़खड़ाता प्रायश्चित' करेंगे.

जब इंसान नहीं, अहंकार बोलता है तो यही होता है. अहंकार संस्कार को विकार में बदल देता है. वो व्यक्ति समाज में मान-सम्मान खो देता है, जिसके बारे में ये कहावत प्रचलित हो जाती है कि 'जब मुंह खोला, तब बुरा बोला!' 'हाता नहीं भाता' का ये विस्तारित रूप है. यही सच्ची सच्चाई है. जिस समाज के खिलाफ रहकर उन्होंने हमेशा अपनी नफरत की राजनीति की है, उसे धर्म के मामले में भी अपमानित-पराजित करने का ये उनका अंहकार है.

शंकराचार्य पर दिया गया बयान अभद्रः अखिलेश यादव

इनका बस चले तो जो विवादित फिल्म आई है उसका नाम बदले बिना ही रिलीज भी कर दें और टैक्स फ्री भी कर दें. अगले चुनाव में वो समाज एक-एक वोट उनके खिलाफ डालकर अपने अपमान और उनके प्रदेश अध्यक्ष के नोटिस का सही जवाब देगा.

म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन : 'जब दुनिया जल रही थी तब कहां था', अमेरिकी विदेश मंत्री ने यूएन पर उठाया सवाल

(जीएनएस)।

म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने संयुक्त राष्ट्र (वठ) को जमकर आड़े हाथों लिया है। उनका साफ कहना है कि जहां दुनिया जल रही है, वहां वठ तमाशबीन बना बैठा है। यूक्रेन से लेकर गाजा तक, रुबियो ने दावा किया कि शांति की मेज सजाने और बंधकों को छुड़ाने का काम अमेरिका ने किया, जबकि वठ सिर्फ कागजी कार्रवाई में उलझा रहा।

रुबियो का यह बयान ग्लोबल पॉलिटिक्स में अमेरिका की बढ़ती 'धमक' और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की 'बेबसी' को बड़े ही बेबाक अंदाज में बयां करता है।

यूएस की 'नो आंसर' वाली क्लासः रुबियो का तीखा प्रहार

मार्को रुबियो ने दो-टूक कहा कि आज की सबसे बड़ी वैश्विक समस्याओं पर संयुक्त राष्ट्र के पास कोई जवाब नहीं है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब यूक्रेन और गाजा में भीषण युद्ध चल रहे थे, तब यह वैश्विक संस्था कहां थी? रुबियो के मुताबिक, वठ ने इन विवादों को सुलझाने में लगभग 'जीरो' भूमिका निभाई है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि भले ही इसमें 'भलाई का टूल' बनने की क्षमता हो, लेकिन हकीकत में यह अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है।

अमेरिका ही है असली संकटमोचक'

रुबियो ने गर्व से कहा कि 2025 के अंत और 2026 की शुरूआत में रूस और यूक्रेन को बातचीत की मेज पर लाना अमेरिका की कामयाबी थी, वठ की नहीं। गाजा के मामले में भी उन्होंने सीधा हमला बोला कि 'बर्बर लोगों' के चंगुल से बंधकों को छुड़ाने का काम अमेरिका ने किया। उनका संदेश साफ था जब दुनिया संकट में होती है, तो लोग न्यूयॉर्क (वठ हेडक्वार्टर) की तरफ नहीं, बल्कि वॉशिंगटन की तरफ मदद के लिए देखते हैं।

ये भी पढ़ेंः ओील्लू ठी६२ः रूस से भारत खरीदेगा र-400 का जखीरा, कहां दागने की तैयारी? पाक-चीन में अभी से दहशत

ईरान पर बमबारी और अंतरराष्ट्रीय कानून की हकीकत

जून 2026 में ईरान के साथ हुए 12 दिनों के संघर्ष का जिक्र करते हुए रुबियो ने कहा कि तेहरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकने में वठ पूरी तरह 'शक्तिहीन' रहा। उन्होंने याद दिलाया कि यह अमेरिकी इ-2 बमवर्षकों की सटीक बमबारी थी, जिसने खतरे को खत्म किया। रुबियो ने चेतावनी दी कि तानाशाह और अपराधी अब 'अंतरराष्ट्रीय कानून' की आड़ लेकर नहीं छिप सकते, क्योंकि वे खुद उन नियमों की धज्जियां उड़ाते हैं।

सीबीएसई एग्जाम सेंटर पर जानें से पहले देखें 'ड्रेस कोड' रुल, लड़कों-लड़कियों के लिए क्या है आदेश

(जीएनएस)।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) की 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं 17 फरवरी 2026 से शुरू हो रही हैं। इस बार लगभग 46 लाख छात्र इन परीक्षाओं में शामिल होंगे। परीक्षा प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने और चेकिंग में लगने वाले समय को कम करने के लिए बोर्ड ने एक सख्त ड्रेस कोड जारी किया है।

परीक्षा केंद्र पर किसी भी तरह की असुविधा से बचने के लिए छात्रों को बोर्ड द्वारा तय किए गए पहनावे के नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि रेगुलर और प्राइवेट दोनों तरह के छात्रों के लिए अलग-अलग नियम होंगे। यहां विस्तार से और आसान भाषा में समझिए एग्जाम सेंटर पर जानें से पहले क्या-क्या तैयारी करें...

लड़कों को सलाह दी गई है कि वे ऐसे कपड़े पहनें जिससे सुरक्षा जांच में आसानी हो। जो छात्र रेगुलर कैटेगरी (स्कूल के माध्यम) से परीक्षा दे रहे हैं, उनके लिए पूरी स्कूल यूनिफॉर्म अनिवार्य है। यूनिफॉर्म साफ और स्कूल के नियमों के अनुसार होनी चाहिए। किसी भी तरह का बदलाव या अतिरिक्त डिजाइन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

प्राइवेट छात्रों के लिए हल्के रंग की साधारण शर्ट या टी-शर्ट पहनने की अनुमति है। गहरे रंग या बड़े प्रिंट वाले कपड़ों से बचें। सादा पैंट या ट्राउजर पहनें। ऐसे कपड़ों से बचें जिनमें बहुत ज्यादा पॉकेट, बड़ी जिप या धातु (टीइ') के बटन लगे हों। भारी या हाई-एंकल जूतों के बजाय साधारण चप्पल या सैंडल पहनना सबसे बेहतर है।

लड़कियों के लिए नियम लगभग वही हैं, लेकिन कुछ अतिरिक्त सावधानियां जरूरी हैं। किसा भी तरह की ज्वेलरी और कपड़ों को लेकर विशेष निर्देश दिए गए हैं। रेगुलर छात्राएं अपनी स्कूल यूनिफॉर्म में ही परीक्षा केंद्र पहुंचें। वहीं प्राइवेट छात्राएं हल्के और आरामदायक कपड़े पहनें। बहुत ज्यादा कढ़ाई, सीक्वेंस या भारी डिजाइनर कपड़ों की अनुमति नहीं दी जाएगी।

ज्वेलरी पर बैन लगा है। परीक्षा हॉल में किसी भी प्रकार के गहने (जैसे- झुमके, नोज पिन, अंगूठी, पायल, चूड़ी, ब्रेसलेट या नेकलेस) पहनकर न जाएं। ये चीजें सुरक्षा जांच में बाधा डालती हैं। हेयर एक्सेसरीज पर भी बैन लगाया गया है। अपने बालों में Metal की हेयर क्लिप या भारी बैंड न लगाएं। साधारण रबर बैंड का उपयोग करें।

हाई हील्स पहनने से बचें। फ्लैट सैंडल या चप्पल पहनना परीक्षा के दौरान आरामदायक रहेगा। एडमिट कार्ड के साथ ये चीजें हैं जरूरी

ड्रेस कोड के अलावा, छात्रों को इन चीजों का ध्यान रखना होगाः

एडमिट कार्ड और आईडी ले जाना जरूरी है। बिना ओरिजिनल एडमिट कार्ड और स्कूल आईडी के एग्जाम हॉल में एंट्री नहीं मिलेगी।

स्टेशनरी पेन, पेंसिल और ज्योमेट्री बॉक्स ले जाने की अनुमति है।

अपने साथ पानी की बोतल ले जा सकते हैं लेकिन ध्यान रखें कि वॉटर बॉटल पूरी तरह से ट्रांसपेरेंट होनी चाहिए।

केवल साधारण एनालॉग घड़ी पहनी जा सकती है। स्मार्टवॉच या डिजिटल घड़ी पूरी तरह प्रतिबंधित है।

समय का ध्यानः बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि सुबह 10:00 बजे के बाद किसी भी छात्र को एंट्री नहीं दी जाएगी। परीक्षा 10:30 बजे शुरू होगी। ट्रैफिक और चेकिंग को देखते हुए कम से कम 45 मिनट पहले पहुंचें। प्रतिबंधित गैजेट्सः मोबाइल, ब्लूटूथ, ईयरफोन, कैलकुलेटर या कोई भी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस घर पर ही छोड़ दें। यदि ये पकड़े जाते हैं, तो इसे 'अनफेयर मीन्स' (UFM) माना जाएगा और परीक्षा रद्द की जा सकती है।

'अब बांग्लादेश में लोकतंत्र का नया सवेरा', बांग्लादेश आम चुनाव में बीएनपी की ऐतिहासिक जीत जीत के बाद पहली बार बोले तारिक रहमान

(जीएनएस)।

बांग्लादेश के आम चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (BNP) की ऐतिहासिक जीत ने देश की राजनीति में एक नए युग की शुरूआत कर दी है। बंपर बहुमत मिलने के बाद पीएम पद के दावेदार तारिक रहमान ने पहली बार मीडिया के सामने आकर जनता के जनादेश का सम्मान किया और इसे 'लोकतंत्र की जीत' करार दिया। रहमान ने स्पष्ट किया कि यह जीत व्यक्तिगत नहीं, बल्कि उन लाखों लोगों के संघर्ष का परिणाम है जिन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए त्याग किया है।

चुनावी सरगर्मी के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गई बधाई का आभार जताते हुए इठढ ने भारत के साथ रचनात्मक और सहयोगपूर्ण संबंधों को आगे बढ़ाने का एक सकारात्मक संकेत भी दिया है।

तारिक रहमान ने अपने पहले संबोधन में जीत का श्रेय बांग्लादेश की जनता को दिया। उन्होंने कहा कि

लोगों ने लोकतंत्र और स्वतंत्रता में जो अटूट विश्वास दिखाया है, उसी का नतीजा है कि इठढ को एक बार फिर सेवा करने का मौका मिला है। रहमान ने इसे केवल पार्टी की नहीं, बल्कि उन सभी संघर्षशील नागरिकों की जीत बताया जिन्होंने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने साफ संदेश दिया कि आने वाली सरकार पूरी तरह से समावेशी और जवाबदेह होगी।

भारत को आभारः मोदी के संदेश का स्वागत

चुनाव में मिली शानदार जीत के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बधाई संदेश का BNP ने गर्मजोशी से स्वागत किया है। पार्टी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर सार्वजनिक रूप से आभार जताते हुए इसे भारत-बांग्लादेश संबंधों के लिए एक सुखद और सकारात्मक शुरूआत बताया। तारिक रहमान के नेतृत्व को मिली इस अंतरराष्ट्रीय मान्यता ने यह साफ कर दिया है कि नई सरकार वैश्विक स्तर पर मजबूत रिश्तों को प्राथमिकता देगी।

पारस्परिक सम्मानः रिश्तों में नई ऊर्जा

'फांसी नहीं, गला दबाने से हुई एप्स्टीन की मौत', पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर का दावा, दोबारा होगी जांच?

(जीएनएस)।

एप्स्टीन मामले ने अमेरिका, भारत, ब्रिटेन समेत 10 से भी ज्यादा देशों की राजनीति बुरी तरह हिला दी है। सिर्फ राजनेता ही नहीं बल्कि वकील, अधिकारी से लेकर व्यापारी तक सैंकड़ों लोगों के नाम इसमें आ चुके हैं। साल 2019 में जैफ्री एप्स्टीन ने जेल के अंदर ही तकरीबन तीन फीट की हाइट से फांसी लगा ली थी। लेकिन अब अ४३ङ्क्स्र२८ करने वाले फोरेंसिक विशेषज्ञ डॉ. माइकल बैडेन ने दावा किया कि एप्स्टीन की मौत फांसी से नहीं हुई थी। जिसके बाद इस मामले ने वापस सबका ध्यान खींच लिया है।

आधिकारिक रिपोर्ट क्या कहती है?

अगस्त 2019 में एपस्टीन न्यूयॉर्क की एक फेडेरल जेल में मृत पाए गए थे। अधिकारियों ने उस समय इसे आत्महत्या बताया और कहा कि उन्होंने फांसी लगाई थी। यह मामला तब और गंभीर था क्योंकि एपस्टीन पर नाबालिग लड़कियों की यौन तस्करी जैसे गंभीर आरोप लगे थे। जिसमें कुछ मामलों में उसे सजा हुई थी और कई सारे मुकदमों की सुनवाई अभी बाकी थी। न्यूयॉर्क मेडिकल एग्जामिनर के कार्यालय ने उस समय पोस्टमार्टम के आधार पर मौत को आत्महत्या ही घोषित किया था, जो आज भी माना जाता है।

डॉ. माइकल बैडेन का दावा डराने वाला

डॉ. माइकल बैडेन, जो एपस्टीन के परिवार की ओर से पोस्टमार्टम के दौरान एक ऑब्जर्वर के रूप में मौजूद थे, लगातार इस नतीजे पर सवाल उठाते रहे हैं। हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में उन्होंने साफ कहा कि उपलब्ध सबूतों और चोटों के पैटर्न को देखकर उन्हें लगता है कि मौत फांसी से नहीं, बल्कि गला घोंटने से हुई हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि मामले में और गहराई से जांच की जरूरत है। पहले भी वे कह चुके हैं कि मौत के सही कारण और तरीके को तय करने के लिए और ज्यादा जानकारी जरूरी है।

ऑटोप्सी रिपोर्ट में क्या मिला था?

पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक, एपस्टीन की गर्दन में कई फ्रैक्चर पाए गए थे। इनमें हायोइड हड्डी और थायरॉयड कार्टिलेज को नुकसान शामिल था। डॉ. बैडेन का कहना है कि इस तरह की चोटें आत्महत्या के मामलों में आम नहीं होतीं।

उनके मुताबिक, ऐसे फ्रैक्चर आमतौर पर गला घोंटने के मामलों में ज्यादा देखे जाते हैं। यही वजह है कि वे इन चोटों को गंभीर मानते हुए आधिकारिक जांच पर सवाल उठा रहे हैं। एपस्टीन की कानूनी टीम ने भी उस समय मेडिकल रिपोर्ट को लेकर असंतोष जताया था।

जेल में सुरक्षा की बड़ी चूक

हालिया रिपोर्टों में यह भी सामने आया है कि जिस मेट्रोपॉलिटन करेक्शनल सेंटर (टउउ) में एपस्टीन को रखा गया था, वहां कई सुरक्षा खामियां थीं।

रिपोर्ट्स के मुताबिकः

सेल की नियमित जांच में लापरवाही हुई।

सेल के अंदर अतिरिक्त सामग्री मिली।

ड्यूटी पर तैनात गार्डों ने कथित तौर पर झूठे रिकॉर्ड बनाए।

ये सभी बातें इस केस को और ज्यादा रहस्यमय बनाती हैं।

सेलमेट को क्यों हटाया गया?

एपस्टीन की मौत से एक रात पहले उनके सेलमेट को दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया गया था। हैरानी की बात यह है कि उसके बाद कोई नया कैदी उनकी सेल में नहीं रखा गया। साथ ही, जेल में जो नियमित निगरानी प्रक्रिया होती है, उसे भी कथित तौर पर सही तरीके से फॉलो नहीं किया गया। इससे यह सवाल और गहरे हो जाते हैं कि आखिर उस रात जेल प्रशासन क्या कर रहा था।

अब भी अनसुलझे हैं कई सवाल

इतने सवाल और नए दावों के बावजूद, अधिकारियों ने अपने आधिकारिक फैसले में कोई बदलाव नहीं किया है। न्यूयॉर्क के मेडिकल एग्जामिनर आज भी इसे आत्महत्या ही मानता है। लेकिन डॉ. माइकल बैडेन और कई अन्य लोगों का मानना है कि इस केस की निष्पक्ष और विस्तृत जांच दोबारा होनी चाहिए।

दोबारा होगी जांच?

जेफरी एपस्टीन की मौत आज भी एक ऐसा मामला है, जिसमें कई तथ्य सामने हैं, कई सवाल खड़े हैं, लेकिन अंतिम सच्चाई को लेकर बहस अब भी जारी है। लोगों के लिए समझना जरूरी है कि यह सिर्फ एक व्यक्ति की मौत का मामला नहीं, बल्कि सिस्टम की पारदर्शिता और जवाबदेही से जुड़ा मुद्दा भी है।

शिक्षक को मिला 'हाथी' गिफ्ट, 2000 किमी. का सफर तय कर अरुणाचल से पहुंचा यूपी

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में इन दिनों एक 'गजराज' की एंट्री ने पूरे प्रदेश का ध्यान खींचा है। यह कहानी किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं है, जहां एक बेटा अपनी मां की इच्छा पूरी करने के लिए 2000 किलोमीटर दूर अरुणाचल प्रदेश से 8 साल का हाथी 'जात्रा सिंह' लेकर आया है।

बीजेपी नेता अशोक त्रिपाठी के घर जब यह नन्हा मेहमान ट्रक से उतरा, तो बैंड-बाजे और 'गणपति बप्पा मोरया' के जयकारों के साथ भव्य स्वागत हुआ। विरासत, सम्मान और ममता की इस अनोखी दास्तां ने छींटपुर गांव को रातों-रात एक 'तीर्थ' बना दिया है।

अरुणाचल प्रदेश के घने जंगलों से निकलकर असम, बंगाल और बिहार की सीमाओं को लांघते हुए 'जात्रा सिंह' आखिरकार प्रतापगढ़ की धरती पर कदम रख चुका है। इस 8 साल के हाथी ने ट्रक में सवार होकर लगभग 2000 किलोमीटर का सफर तय किया। इसे लाने में करीब 1.5 लाख रुपये का खर्च आया और सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम रहे। जैसे ही जात्रा सिंह गांव पहुँचा, ग्रामीणों ने पुष्प वर्षा कर उसका ऐसा स्वागत किया मानो साक्षात गणेश जी पधारे हों।

अशोक त्रिपाठी प्रतापगढ़ के कद्दावर नेता और बड़े व्यवसायी हैं।

इस हाथी के पीछे एक भावुक कहानी छिपी है। अशोक त्रिपाठी के दिवंगत पिता राम प्रकाश त्रिपाठी अरुणाचल प्रदेश में प्रधानाचार्य थे। उनके सम्मान में वहां के लोगों ने साल 2023 में उनकी पत्नी केवल देवी को यह हाथी उपहार में दिया था। दो साल तक अरुणाचल में रहने के बाद, मां की ममता जात्रा सिंह को अपने करीब लाने के लिए मचल उठी। मां की इसी इच्छा को शिरोधार्य करते हुए अशोक त्रिपाठी ने कानूनी प्रक्रियाओं का लंबा सफर तय कर इसे घर लाने का फैसला किया।

बसपा से राजनीतिक पारी शुरू करने वाले त्रिपाठी अब बीजेपी का हिस्सा हैं। राजनीति की उठापटक के बीच उन्होंने अपनी पारिवारिक विरासत और धार्मिक आस्था को सर्वोपरि रखा। जात्रा सिंह के लिए गांव में खास बाड़ा बनवाया गया है और अरुणाचल से आए कुशल महावत उसकी दिन-रात सेवा कर रहे हैं। नेता जी का यह 'हाथी प्रेम' अब पूरे जिले में चर्चा का विषय बना हुआ है।

पूजन, तिलक और गांव में उत्सव का माहौल

जात्रा सिंह के आने के अगले दिन छींटपुर गांव के मंदिर परिसर में उत्सव जैसा नजारा था। विधि-विधान से स्नान कराने के बाद हाथी का तिलक किया गया और मंत्रोच्चार के साथ पूजा-अर्चना हुई। गांव के बच्चे हों या बुजुर्ग, हर कोई इस नए मेहमान की एक झलक पाने और उसे पूजने के लिए बेताब दिखा। प्रसाद वितरण के साथ जात्रा सिंह को गुड़ और केले खिलाए गए। अब पूरा गांव जात्रा सिंह को अपने परिवार का हिस्सा मानने लगा है।

कानून के घेरे में 'गजराज' का पालन-पोषण

हाथी पालना केवल शौक नहीं, बल्कि बड़ी कानूनी जिम्मेदारी भी है। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत हाथी का उपहार लेना और उसे एक राज्य से दूसरे राज्य ले जाना बेहद जटिल प्रक्रिया है। अशोक त्रिपाठी को वन विभाग से अनुमति लेने में करीब डेढ़ साल का वक्त लगा। विभाग ने हाथी के रहने, खाने और महावत की कुशलता की पूरी जांच करने के बाद ही अनुमति दी। जात्रा सिंह अब कड़े नियमों और विशेषज्ञों की देखरेख में अपनी नई पारी प्रतापगढ़ में शुरू कर चुका है।